Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : **editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org**
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य **4** रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- **42** अंक-**38**
कल्पादि सम्वत् **1972949118**
सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा
दिनांक **05** दिसम्बर से **11** दिसम्बर **2018** तक
मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी से मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी **2075** तक
वार्षिक शुल्क **150** रुपये
पृष्ठ संख्या **12**

भारतीय नारी.... पृष्ठ- **2**
स्वाइन फ्लू जानकारी.... पृष्ठ- **4**
मनुष्य के ऊपर... पृष्ठ- **5**
कौन थे आर्य... पृष्ठ- **7**
अब तो राम मंदिर... पृष्ठ- **12**

- कोई राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष नहीं हो सकता
- हिन्दुओं के विश्वास के लिए चुनाव पूर्व मंदिर निर्माण निश्चित करे भाजपा
- इतिहास में दर्ज है डॉ. अम्बेडकर की सोच
- चुनावी मौसम में टिकट पर आधारित हो रहीं निष्ठाएं

क्या ११ दिसंबर तक होगा मंदिर पर फैसला

केन्द्र सरकार अध्यादेश लाकर राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करे–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

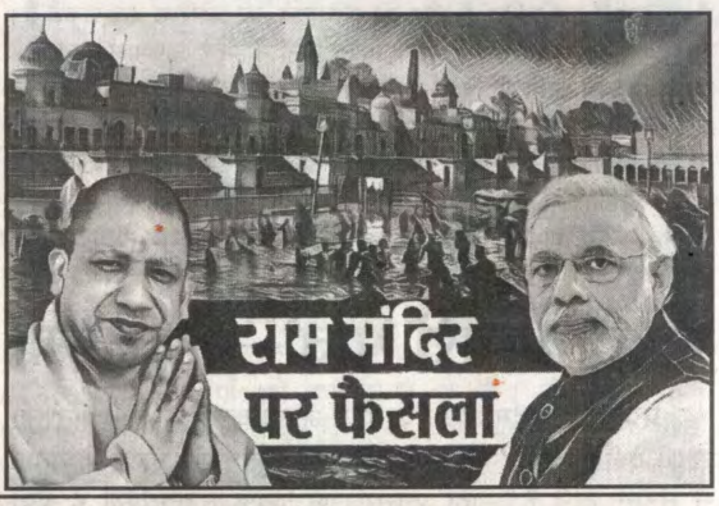
राम मंदिर
पर फैसला

अयोध्या में स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि उन्हें एक वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री ने आश्वासन दिया है कि अयोध्या में राम मंदिर पर फैसला ११ दिसंबर के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके मंत्रियों द्वारा लिया जाएगा। अयोध्या में आयोजित विश्व हिंदू परिषद की धर्म सभा में शामिल होने आए धार्मिक नेता स्ध्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि उन्हें एक वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री ने आश्वासन दिया है, जिनसे उनकी मुलाकात हुई थी. हालांकि उन्होंने मंत्री का नाम नहीं बताया। मंत्री के

शेष पृष्ठ 10 पर

भाजपा एवं कांग्रेस ने आम जनता के मौलिक अधिकारों का किया हनन-शर्मा

● संवाददाता ●

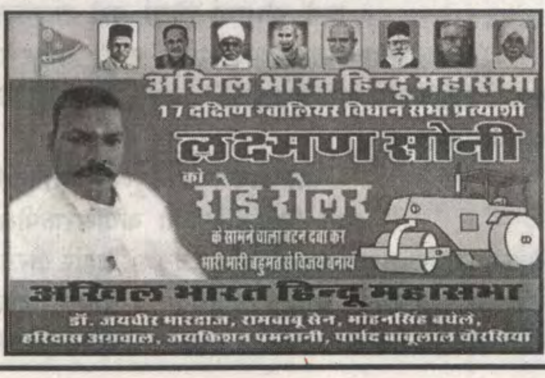
अखिल भारत हिन्दू महासभा
17 दक्षिण ग्वालियर विधान सभा प्रत्याशी
लक्ष्मण सोनी
को
रोड रोलर
के सामने वाला बटन दबा कर
भारी भारी बहुमत से विजय बनायें
अखिल भारत हिन्दू महासभा
डॉ. जयवीर भारद्वाज, रामबाबू सेन, मोहनसिंह बघेल,
हरिदास अग्रवाल, जयकिशन पमनानी, पार्षद बाबूलाल चौरसिया

अखिल भारत हिन्दू महासभा के १७ ग्वालियर दक्षिण विधानसभा के प्रत्याशी लक्ष्मण सोनी के समर्थन में हेमू कॉलोनी चौक पर आम सभा का आयोजन किया गया। सभा के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए भाजपा एवं कांग्रेस की जनविरोधी नीतियों की जमकर आलोचना की। उन्होंने कहा कि पिछले पन्द्रह वर्षों से लगातार मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकार के मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने प्रदेश को लूटते–लूटते खोखला कर दिया है। व्यापार सहित सभी विभागों में भ्रष्टाचार चरम पर है। सड़कें टूटी हैं। किसानों, मजदूरों व युवाओं की स्थिति बद से बदतर हो रही है। उन्होंने कहा कि २०१६ के लोकसभा चुनाव से पूर्व भाजपा नेता श्री नरेन्द्र मोदी के भगवान राम के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर बनाने का वादा किया था,परन्तु साढ़े चार वर्ष बीतने के बाद भी भगवान राम का मंदिर नहीं बना। धारा –३७० समाप्त नहीं हुई, समान नागरिक संहिता लागू नहीं हुई। यहां तक कि केन्द्र की भाजपा सरकार ने गौमाता की रक्षा के लिये कोई–कानून नहीं बनाया। यह देश के १०० करोड़ हिन्दुओं के साथ धोखा है। देश

शेष पृष्ठ 10 पर

अंतर्मन की शक्ति

स्वामी रामकृष्ण परमहंस माँ काली के उपासक थे। दुर्गा का ही एक रूप माँ काली की उन्होंने अनवरत ध्यान और साधना की, जिससे जगतमाता से उनका एकाकार संभव हो पाया। रामकृष्ण परमहंस की तरह ही आम श्रद्धालु भी शक्ति के रूप में देवी की उपासना करते हैं। दरअसल, शक्ति स्वरूपा देवी मातृ–स्वरूपा भी हैं। माता के अंदर वात्सल्य भाव मौजूद होता है। वे करुणामयी हैं। भक्तों के दुर्गुणों को दूर कर उनमें सद्गुण भरती हैं। यही विश्वास हमें शक्ति साधना की ओर प्रेरित करता है।

ध्यान, साधना, प्रार्थना, उपवास के माध्यम से कोई भी श्रद्धालु अपने तमों और रजो गुण पर विजय प्राप्त कर अंतर्मन को जाग्रत कर सकता है। नवरात्र दो शब्दों से बना है—नव और रात्रि। हम रात्रि में शयन करते हैं। शयन में न सिर्फ हमारे शरीर को आराम मिलता है बल्कि मन और चित्त भी शांत होते हैं। इससे हम ऊर्जावान हो पाते हैं। शरद ऋतु के आगमन पर ही हम नवरात्र मनाते हैं। शरद ऋतु के आगमन का गुणगान गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में भी किया है। परिवर्तन तो अपने आप में सुंदर होता है। इस परिवर्तन काल में प्रकृति पुराने को त्याग कर फिर से नया रूप सृजित करती है। अक्सर राग, द्वेष, अनिश्चितता और भय जैसी नकारात्मक शक्तियाँ हमारे मन को घेरने लगती हैं। हमारा मन विचलित होने लगता है। सफलताओं और असफलताओं के चक्र में हम स्वयं को घिरा हुआ महसूस करने लगते हैं। यहाँ पर हम प्रकृति से सीख ले सकते हैं कि बुरे गुणों को त्याग कर अपने भीतर अच्छे गुणों को धारण कर लें। नकारात्मक भावों से मुक्ति पाने में सहायक बनते हैं मौन प्रार्थना, उपवास, साधना और ध्यान। इन सभी के माध्यम से नवरात्र यानी नौ दिनों में व्यक्ति स्वयं को बुरे गुणों से रहित कर सकता है।

जहाँ उपवास शरीर को पवित्र करता है, वहीं मौन बेचैन मन को शांत करता है। दूसरी तरफ हमारे अंदर असीम ऊर्जा के रूप में शक्ति संग्रहित है। सामान्य तौर पर हम इस शक्ति से अनजान बने रहते हैं। नवरात्र के दिनों में हम अपनी इस शक्ति के स्रोत को पहचानने की कोशिश कर सकते हैं। जाग्रत अंतर्मन ही शक्ति है। इन नौ पवित्र दिनों में हमारे आसपास बहुत सारे यज्ञ–अनुष्ठान आदि भी किए जाते हैं। यद्यपि हम इन यज्ञों और हवनों के अर्थ हम अच्छी तरह नहीं समझ पाते हैं, लेकिन आस्थावश हम आँखें बंद किए बैठे रहते हैं। इस दौरान हमें अपने हृदय और मन को खुला रखना चाहिए तथा इन तरंगों को महसूस करना चाहिए। अनुष्ठानों के साथ मंत्रोच्चारण भी अंतर्मन की चेतना को जगाने में सहायक बनते हैं। नवरात्र में पूरी सृष्टि जीवंत हो जाती है। इस अवसर पर हम इसे पहचानने की कोशिश करें।

भारतीय नारी माता—अनुसूइया

प्रजापति कर्दम और देवहूती ने अपनी कन्या का नाम अनुसूया रखा। देवी अनुसूया पतिव्रताओं की आदर्शभूता और महान दिव्यतेज से सम्पन्न नारी हैं। माता अनुसूया का विवाह सप्तऋषियों में श्रेष्ठ ब्रह्मा जी के मानस पुत्र अत्रि के साथ हुआ। अनुसूया नाम है—परदोष दर्शन का, गुणों में भी दोष–बुद्धि और जो इन विकारों से मुक्त हो वह अनुसूया है। इसी प्रकार अ+त्रि अर्थात् तीनों गुणों सत्व–रज–तम से जो अतीत हो, गुणातीत हो अत्रि है। श्रेष्ठ दम्पत्ति महर्षि अत्रि एवं माता अनुसूया के तपोबल से ही विद्या एवं नामरूप जीवनयापन करते हुए सदाचार परायण हो माता अनुसूया के तपोबल से ही भागीरथी गंगा की एक पवित्र धारा चित्रकूट में प्रविष्ट हुई और मंदाकिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई। महर्षि जहाँ ज्ञान, तपस्या, सदाचार भक्ति एवं मंत्रशक्ति के मूर्तिवान स्वरूप हैं वहीं माता अनुसूया पतिव्रत धर्म एवं शील की मूर्तिमती विग्रह हैं। वनपवास काल में भगवान राम माता सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ अपने भक्त महर्षि अत्रि एवं माता अनुसूया की भक्ति को सफल करने के उद्देश्य से स्वयं उनके आश्रम पधारे। माता अनुसूया ने सीता माता को पतिव्रत धर्म का उपदेश दिया। माता अनुसूया ने अपने पतिव्रत धर्म के बल पर ही शैव्या ब्राह्मणी के मृत पति को जीवित किया और बाधित सूर्य को उदित कराकर संसार का कल्याण किया। सृष्टि के आरम्भ में जब ब्रह्मा जी ने महर्षि अत्रि और अनुसूया को सृष्टिवर्धन को आज्ञा दी तो इन्होंने केवल तपश्चर्या का आश्रय लियाा। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने दर्शन दिया और इनका पुत्र बनना स्वीकार किया। दत्तात्रेय विष्णु अंशी, चन्द्रमा ब्रह्मा के अंश से और महर्षि दुर्वासा के अंश से अत्रि और अनुसूया को पुत्र रूप में आविर्भत हुए।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : यह सप्ताह कुछ लोगों के लिए मिला–जुला फल देने वाला प्रतीत होगा। पिता के विरूद्ध कार्य करने में परिवार में तनावपूर्ण माहौल रहेगा। सन्तान की ओर से मन प्रसन्नचित्त रहेगा। व्यापारी वर्ग को दूर की यात्राओं से लाभ होगा।

वृष : इस सप्ताह नौकरी पेशा वाले अपने निवास स्थान को लेकर सचेत रहें अन्यथा अनिद्रा के शिकार हो सकते हैं। आमदनी में इस समय वृद्धि तो होगी ही साथ में खर्च के स्रोत भी बढेगे। जो लोग लम्बे समय से स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त हैं उनको लाभ मिलेगा।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों का ज्वैलरी या वाहन पर धन खर्च होगा। धन आयेगा लेकिन श्रम अधिक करना पड़ेगा। जो लोग शुगर से पीड़ित है वो सावधान रहें। सरकारी तंत्र से सावधानी बरतें। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा।

कर्क : इस सप्ताह दाम्पतय जीवन में प्रेम बढ़ेगा जिससे परिवार में सुखद वातावरण बना रहेगा। रिश्तेदारों से इस समय दूरी ही बनाये रखना आपके लिए लाभदायक होगा। यह समय आपक के लिए उन्नति कारक ही सिद्ध होगा। इस समय आप जमीन जायदाद की खरीदारी कर सकते है।

सिंह : इस सप्ताह आपको सावधान रहने की जरूरत है अन्यथा किसी महिला के कारण तनाव ग्रस्त रहना पड़ सकता है। जो कार्य आप दूसरों के भरोसे छोड़ रखे है। उनमें विलम्ब की सम्भावना है। पारिवरिक सम्बन्धों में तनाव बना रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या : इस सप्ताह आपके बहुत दिनों से रूके कार्य जिन पर आपका ध्यान नहीं जा रहा था वो कार्य फिर से शुरू होगे और आपको सफलता भी मिलेगी। बातचीत करने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। लोगों को बोनस व अतिरिक्त लाभ मिलने के संकेत नजर आ रहें।

तुला : इस सप्ताह खर्च अधिक रहेगा। आलस्य सतायेगा फिर भी कार्य करना पड़ेगा जिससे मन अप्रसन्न रहेगा। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें अन्यथा कोई दुर्घटना घट सकती है। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पति पत्नी में तनाव की स्थिति रहेगी।

वृश्चिक : इस वक्त उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी। जितनी आप अपेक्षा करेंगे। किसी महिला के कारण खर्च बढ़ेगा। आपके परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न होगे। सन्तान की प्रगति में बाधा आ सकती है।

धनु : यह सप्ताह कुछ लोगों की आय में वृद्धि करायेगा। परिवार की दृष्टि से यह समय अच्छा है। किसी अधिकारी के सहयोग से पुराना कार्य पूर्ण होगा। कार्य व्यापार में वृद्धि व लगभग सभी तरह के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी परन्तु भविष्य की योजनाएं बहुत सूझबूझ कर बनाएं।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों को खोई हुई वस्तु की प्राप्ति होगी। मित्रों व रिष्तेदारों से सम्बन्धों में मधुरता रखें। नयी कार्य योजनाओं को शीघ्र ही प्रारम्भ करें। रोजगार के नये अवसर प्राप्त होगे। आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं है।

कुम्भ : इस सप्ताह के प्रारम्भ में खर्च अधिक हो सकता है, जिससे मन थोड़ा सा विचलित होगा। कुछ लोगों को मॉसपेशियों से सम्बन्धित शिकायत रहेगी। रूके हुये धन की प्राप्ति होगी। पिता के विरूद्ध कार्य करने में परिवार में तनावपूर्ण माहौल रहेगा।

मीन : इस सप्ताह कुछ नौकरी वाले जातको को बोनस की प्राप्ति तथा परिवार में मांगलिक कार्य होगें। उत्साह में वृद्धि होगी जिससे कार्य करने में मन लगेगा। धार्मिक आडम्बरों से बचें। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

प्रथम सोपान (बालकाण्ड)

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मडलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौः।।१।।

अक्षरों, अर्थसमूहों, रसों, छन्दों और मडलोंकी करनेवाली सरस्वतीजी और गणेशजी की मैं वन्दना करता हूँ।।१।।

भवानीशडकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्रवरम्।।२।।

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्रीपार्वतीजी और श्रीशंकरजी को मैं वन्दना करता हूँ, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते।।२।।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रिता हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।३।।

ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है।।३।।

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्ररकपीश्ररौ।।४।।

श्री सीतारामजी के गुणसमूहरूपी पवित्र वन में विहार करने वाले, विशुद्ध विज्ञानसम्पन्न कवीश्वर श्रीवाल्मीकिजी और कपीश्वर श्रीहनुमानजी की मैं वन्दना करता हूँ।।४।।

अध्यक्षीय

अब तो राम मंदिर पर कानून लाना ही होगा

राष्ट्रीय उद्‌बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

दशकों से चल रहा राम मंदिर निर्माण निश्चित रूप से अब चरम पर है। होना भी चाहिए, क्योकि पिछले तीन दशक से इस लड़ाई का स्वयंभू झंडा बरदार भारतीय जनता पार्टी इन दिनों केन्द्र व उत्तर प्रदेश में सत्ता में हैं और यह सत्ता उन्हें राम मंदिर के नाम पर मिली है। बार–बार स्वयं को हिन्दुओं का हितैषी बताने वाली भाजपा मंदिर निर्माण के नाम पर करोड़ों हिन्दुओं का मत तो पा लिया, लेकिन फिलहाल मंदिर निर्माण के नाम पर टाल मटोल कर रही है। अयोध्या में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित धर्मसभा शायद किसी आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करने को कम भाजपा की सरकार के चेताने के लिए अधिक आयोजित की गई थी। इसका असर भी देखने को मिला। गत दिनों अयोध्या पूरी तरह से राममय नजर आई। अयोध्या की सड़कों पर राम भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। धर्मसभा के लिए प्रदेश के अलावा देश के कई हिस्सों से आये लोगों ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए अध्यादेश लाने की मांग की। सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ लोगों को नाराजगी भी नजर आई। एक दावे के मुताबिक, धर्मसभा में एक लाख से ज्यादा लोगों ने शिरकत की। राम मंदिर निर्माण की शपथ के साथ ही धर्मसभा समाप्त हो गई। धर्म सभा में भले ही कोई लिखित प्रस्ताव जारी नहीं हुआ, लेकिन इस धर्म सभा को भविष्य के प्रदर्शनों की शुरुआत के तौर पर माना गया। धर्मसभा में न तो मंच से कोई विवादित बयान दिया गया और न ही अयोध्या के माहौल में कोई खलल पड़ी। यह जरूर था कि आम मुस्लिमों में कहीं न कहीं भय का माहौल जरूर दिखा। आयोजन से पहले अयोध्या के मुस्लिमों के पलायन की बात कहने वाले बाबरी मस्जिद के पक्षकार इकबाल अंसारी भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के इंतजामों से खासे संतुष्ट नजर आये। इतना ही नहीं, उन्होंने इस पर बड़ा बयान देते हुए कहा कि धर्मसभा में आये साधु–संत काफी भले लोग हैं। अयोध्या में उमड़े रामभक्तों का सैलाब में जय श्रीराम के नारे लगाए। अयोध्या की मिट्टी हाथ में लेकर राम भक्तों ने राम जन्मभूमि पर विशाल राम मंदिर निर्माण की शपथ ली। कार्यक्रम में राम भक्तों को शपथ दिलाई गई कि हम इस संघर्ष को बेकार नहीं जाने देंगे। राम मंदिर निर्माण के लिए किसी भी कीमत पर आगे बढ़ेंगे। इससे पहले राम नगरी की सड़कें और गलियां राम भक्तों से खचाखच भर गई। कई जगह लोगों ने फूल बरसाकर राम भक्तों का स्वागत भी किया। उधर उद्धव ठाकरे ने भी रामलला के दर्शन किये। दर्शन के बाद उन्होंने मंदिर निर्माण के लिए राम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास को चांदी की ईट भी भेंट की। ठाकरे ने राम मंदिर पर अध्यादेश लाने की मांग की। उन्होंने कहा कि सरकार अध्यादेश लाये, शिवसेना साथ देगी। उद्धव ठाकरे ने कहा कि चाहे कानून लाइए या फिर अध्यादेश लेकिन अयोध्या में राम मंदिर अवश्य बनाइए। उन्होंने कहा कि आज हर हिंदू की जुबान पर सिर्फ एक सवाल है कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण कब होगा। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राम मंदिर निर्माण अब भाजपा सरकार के लिए गले की हड्डी बन गया है और सरकार को इसका समाधान निकालना ही होगा नहीं तो उसके लिए २०१६ में चुनावी वैतरणी पार करना मुश्किल होगा।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

---

सम्पादकीय

हिन्दुओं के विश्वास के लिए चुनाव पूर्व मंदिर निर्माण निश्चित करे भाजपा

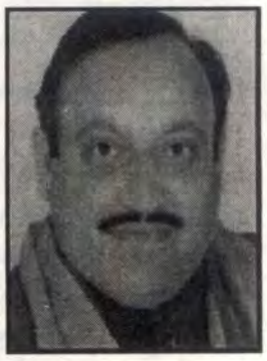

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

लोकसभा चुनाव से पहले अगर भाजपा सरकार ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का कोई कारगर कदम नहीं उठाया तो इसका बड़ा नुकसान न सिर्फ भाजपा का होगा बल्कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है क्योंकि करोड़ों हिन्दुओं का विश्वास इस मुद्दे से जुड़ा है। राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण को लेकर अखिल भारत हिन्दू महासभा सहित कई हिन्दू संगठनों और संतों द्वारा सरकार पर कानून बनाने के लिए दबाव देखा जा रहा था लेकिन एक खबर ये भी है कि भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने साफ कर दिया कि वह जनवरी में होने वाली सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई का इंतजार करेंगे। बीजेपी का यह बयान यह दर्शा रहा है कि भाजपा अयोध्या की विवादित जमीन पर राम मंदिर बनाने को लेकर अभी तक कोई अध्यादेश बनाने की ओर नहीं बढ़ रही है। इस पर अखिल भारत हिन्दू महासभा ने आलोचना करते हुए कहा है कि इंतजार की सारी सीमाएं खत्म हो चुकी हैं। उधर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर मामले में आखिरकार चुप्पी तोड़ ही दी। उन्होंने इसके लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि वो सुप्रीम कोर्ट के जजों को डराने का प्रयास कर महाभियोग ला चुके हैं। उन्होंने न्यायतंत्र को डराने का प्रयास किया है लेकिन लोकतंत्र उनसे नहीं डरने वाला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सुप्रीम कोर्ट के बडे वकीलों को राज्यसभा का सदस्य बनाती है और वे सदस्य उन न्यायाधीशों को महाभियोग के नाम से डराने का नया नाटक खेल रहे हैं जो न्यायाधीश उनके राजनैतिक इरादों के अनुसार कार्य नहीं करते। सम मंदिर मामले में अगर इन बातों का संदर्भ लिया जाए तो अमित शाह और पीएम मोदी का बयान महज भ्रमित करने वाला दिखाई दे रहा है क्योंकि जहां शाह का बयान यह दर्शा रहा है कि अध्यादेश की तरफ सरकार नहीं बढ़ रही है। वहीं, नरेंद्र मोदी का बयान यह दर्शा रहा है कि वह कांग्रेस को लोकतंत्र के साथ खेलने नहीं देगी। जिसका मतलब यह हो सकता है कि संसद में कांग्रेस से बीजेपी नहीं डरने वाली और यह अध्यादेश की तरफ एक इशारा भी है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत अब राम मंदिर निर्माण मामले पर सरकार पर दबाव बनाने का प्रयास किया और कहा कि सरकार सोचे कि मंदिर के लिए कानून कैसे लाया जा सकता है। उन्होंने न्यायपालिका पर निशाना साधते हुए कहा कि न्यायपूर्ण बात यही होगी कि जल्द मंदिर बने, लेकिन यह कोर्ट की प्राथमिकता में नहीं है तो सरकार सोचे कि मंदिर बनाने के लिए कानून कैसे आ सकता है। दूसरी तरफ योगी आदित्यनाथ ने भगवान राम की १५१ मीटर ऊंची मूर्ति को हरी झंडी दिखा दी है। मूर्ति सरयू नदी के तट पर लगाई जाएगी। इसे योगी आदित्यनाथ द्वारा रामभक्तों को खुश करने का एक तरीका मात्र ही माना जा सकता है। जनता की तो अब सिर्फ एक ही मांग दिखाई दे रही है और वो कि मंदिर अब बन जाना चाहिए। जनता को इस बात से फर्क नहीं पड़ रहा था कि कौन सा नेता क्या बयान दे रहा है वह सिर्फ इतना चाहती है कि अब हिन्दुस्तान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और इस पार्टी ने मंदिर मुद्दे के दम पर ही सरकार बनाई थी तो अब राम मंदिर के निर्माण का कार्य भी जल्द से जल्द बीजेपी शुरू कराए, चाहे इसके लिए उसे अध्यादेश ही क्यों न लाना पड़े। अगर राम मंदिर पर भाजपा कोई ठोस और सकारात्मक कदम शीघ्र उठा लेती है तो उसके लिए यह निश्चित रूप से फायदेमंद होगा।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

स्वाइन फ्लू जानकारी, बचाव एवं सुझाव

डॉ. वेद प्रकाश

स्वाइन फ्लू एक विशेष प्रकार के विषाणु इन्फ्लूएंजा एच१ एन१ के कारण होता है। सबसे पहले यह विषाणु स्वाइन (सुअर) में पाया गया था। इसलिये इस रोग को स्वाइन फ्लू कहा जाता है।

स्वाइन फ्लू के लक्षणः

स्वाइन फ्लू के लक्षण सामान्य फ्लू की तरह है। स्वाइन फ्लू के लक्षण रोगी में सामान्य फ्लू के लक्षण की अपेक्षा तीव्रता से आते है। वस्तुतः स्वाइन फ्लू मौसमी फ्लू का ही एक प्रकार है।

लक्षणः

❖ सिरदर्द ❖ तेज बुखार व बुखार के साथ सर्दी लगना ❖ खांसी या गले मे सूजन या दर्द ❖ नाक बहना ❖ अत्यधिक थकान ❖ सांस लेने में कठिनाई ❖ मांसपेशियों में पीड़ा ❖ उल्टी/दस्त ❖ गर्दन में तीव्र दर्द/अकड़न ❖ ठीक से सोंचने में कठिनाई ❖ सीने में दर्द इत्यादि लक्षण हो सकते हैं।

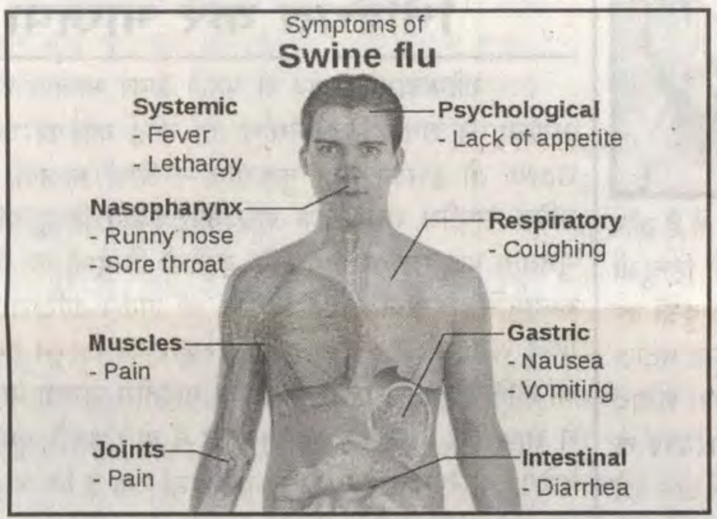

स्वाइन फ्लू के फैलने का तरीका

स्वाइन फ्लू का सक्रमण व्यक्ति को स्वाइन फ्लू से ग्रसित रोगी के संपर्क में आने से होता है। जैसे रोगी से हाथ मिलाना, बिना हाथ धोकर कुछ खाना या पीना, रोगी द्वारा बिना मुख और नाक को ढके छींकने, खांसने और बहुत निकट से बात करने पर फैलता है। स्वाइन फ्लू का विषाणु रोगी से स्वस्थ व्यक्ति के श्वास मार्ग से फेफड़े में प्रवेश कर जाते हैं। अधिकतर लोगों में यह संक्रमण बीमारी का रूप नहीं ले पाता है।

सामान्यतः स्वाइन फ्लू का संक्रमण उन लोगों में पनपने का खतरा अधिक होता है जा पहले से किसी गंभीर रोग से ग्रसित हैं। लंबे समय से अस्पताल में भर्ती होते हैं। जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है जैसे कि एड्स के रोगी, मधुमेह, दमा, टी.बी., श्वास के रोगी, नशे के लती, कुपोषण व एनीमीया खून की अल्पता से प्रभावित रोगी और गर्भवती महिलाएं।

जटिलताएं

स्वाइन फ्लू के सामान्य लक्षणों के जटिल होने पर रोगी को पानी की कमी, न्यूमोनिया या श्वास नली का संक्रमण हो सकता है। ऐसी स्थिति गंभीर होती है।

अब तक प्राप्त आकड़ों के अनुसार इस बीमारी से मौत होने की आशंका ०.५ से १ प्रतिशत तक हो सकती है। इसलिए स्वाइन फ्लू से अधिक भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

जाँच

किसी रोगी को स्वाइन फ्लू होने की पुष्टि स्वाब से की जाती है निम्न तीन में से किसी एक जाँच–

❖ विश्व स्वास्थय संगठन द्वारा मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला से पीड़ित की जाँच में इंफ्लूएंजा एच १ एन १ एंटीजन।

❖ पी०सी०आर० जाँच में इंफ्लूएंजा एच१ एन१।

❖ वायरल कल्चर की जाँच।

उपचार व बचाव

❖ रोग की पुष्टि होने पर रोगी को मुँह ढककर रखना चाहिए तथा हो सके तो रोगी को अलग कमरे, अलग बेड पर लिटाएँ, जिससे स्वाइन फ्लू के विषाणु वातावरण में न फैलें।

❖ स्वाइन फ्लू के रोगी द्वारा प्रयोग की गई वस्तुओं जैसे रूमाल व चादरों आदि को सुरक्षित विधि से साफ करे।

❖ खाने से पहले साबुन से हाथ करे।

❖ स्वाइन फ्लू को रोकने के लिये भीड़भाड़ से जितना संभव हो उकतना

शेष पृष्ठ १० पर

भारत की महान विरासतों को पहचानें

❖ जब तक अपने दम में दम हो, राष्ट्र हमेशा सर्वप्रथम हो।

❖ भारत माँ के चार सिपाही–हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई।

❖ एक ही हमारी देवी है–भारत माता और एक ही हमारा देवता है–राष्ट्रदेव स्वामी विवेकानंद जी

❖ वयं राष्ट्र जागृयाम।

❖ धन–धान्य, पुष्पभरा, ऐसी है हमारी वसुन्धरा।

❖ मातृभूमि, मातृभाषा व माँ का कोई विकल्प नहीं है।

❖ अपनी भाषा अपना देश। देता है गौरव का संदेश।।

❖ जननी जन्मभूमीश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

❖ जमीन के ऊपर और नीचे करे ऐसे काम, कि आसमान में दिखे हिन्द का नाम।

❖ स्वर्गलोक में देवगण यह गीत गाते हैं कि वे व्यक्ति धन्य हैं, जो भारत भूमि में जन्म लेते हैं। गायंति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे। (वि.पु. २/३/२४)

❖ श्री जयशंकर प्रसाद ने लिखा–
अरुण यह मधुमय देश हमारा। जहाँ पहुँच अंजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।

❖ शक, हुण, कुषाण, मुगल आदि यहाँ आये, भारत ने सबको आत्मसात कर लिया।

❖ यूनान, मिस्र, रोम सब मिट गये जहाँ से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।

❖ एकता अखंडता का नाम भारतीयता है।

❖ भारतीय होना ही सारे भेदों को मिटाना है।

❖ पहले देश हित फिर स्वहित।

❖ जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में माँगे मातृभूमि से यह वर।
तेरा वैभव अगर रहे माँ, हम दिन बार रहे ना रहें।।

❖ रत्नाकरा द्यौतपदां, हिमालय किरीटिनम्।
ब्रह्मा राजर्षि रत्नाढयां, वन्देमातरम्।।

❖ माताभुमिः पुत्राहम् पृथिव्याः (अथर्व वेद) भूमि मेरी माता है और मैं इस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

❖ राष्ट्राभिमान के मन्दिर का हम, सदियों से पूजन करते।
श्रद्धा से नित भारत माँ का, सब हिलमिल कर वन्दन करते।।

फिटकरी है कमाल की

फिटकरी के बारे में तो आप अच्छी तरह से जानते होंगे। यह आपके घर में आसानी से मिल जाएगी। वैसे तो फिटकरी दो तरह की होती है। लाल और सफेद फिटकरी। घर में ज्यादातर सफेद रंग की फिटकरी आसानी से मिल जाएगी। फिटकरी में एंटी बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं। जो हमारे लिए काफी फायदेमंद हैं। इसे धर में, किचन में और कई लोग तो शेव करने के बाद इसका इस्तेमाल करते हैं। साथ ही पानी को साफ करने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन आप जानते हैं कि यह इन चीजों के अलावा और कई चीजों में फायदेमंद साबित हो सकती है। चुटकी भर भी फिटकरी आपके कई कामों को आसान कर सकती है। यह सेहत के साथ–साथ आपके सौन्दर्य के लिए भी काफी फायदेमंद है। आयुर्वेद के अनुसार माना जाता है कि इसमें ऐसे गुण पाए जाते हैं जो कि कई बीमारियों के लिए फायदेमंद हैं। जानिए चुटकीभर फिटकरी हमारे लिए किस तरह फायदेमंद है।

अनचाहे बालें से दिलाएं निजातः आप चुटकीभर फिटकरी से अनचाहे बालों से भी निजात पा सकते हैं। इसके लिए चुटकी भी फिटकरी को गुलाबजल में मिला लें। इसके बाद अनचाहे बालों पर लगाकर धीरे से मसाज करें। इससे आपको निजात मिल जाएगा।

बालों की समस्या से दिलाएं निजातः अगर आपके सिर में गंदगी या फिर जुएं हो तो फिटकरी के पानी से बाल धोना फायदेमंद रहेगा। क्योंकि इसमें एंटीबैक्टरीरियल गुण पाए जाते हैं। जिससे जुएं और आपके सिर की दूसरी गंदगी भी धुल जाती है। जिससे आपके बाल शाइनिंग करने के साथ–साथ मजबूत भी हो जाते हैं।

मनुष्य के ऊपर पाँच कारणों का प्रभाव विशेष होता है

✍ खुशहाल चन्द्र 'आर्य'

मनुष्य का जीवन अच्छा बने या बुरा बने इसके लिए इसके जीवन पर पाँच कारणों का प्रभाव विशेष दिखाई देता है। उन्हीं के अनुसार मनुष्य का जीवन अच्छा या बुरा सुनता है। वे पाँच कारण इस प्रकार हैं।

१. **अपने पूर्व जन्म में किये कर्मो के अनुसार :** मनुष्य पूर्व जन्म यानि इस जन्म से पहले वाले जन्म में अच्छे या बुरे जैसे भी कर्म किये थे उसी के अनुसार ईश्वर उस जीव को अगली योनि, जाति, आयु, भोग के रूप में देता है। जाति का तात्पर्य यह होता है कि उस जीव को अगली योनि मनुष्य, पशु–पक्षी या कीट–पतंग आदि उसके पिछले किये कर्मों के अनुसार देता है। इनमें मनुष्य योनि सबसे उत्तम व श्रेष्ठ साथ ही यह योनि आन्तिम योनि होने से मोक्ष कर द्वारा भी है, जो जीव का मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को धरती पर भेजता है। इसीलिए जीव का मनुष्य जीवन पाना उसके अच्छे किये कर्मो का फल है। जाति कभी बदली नहीं जाती यानि किसी मनुष्य की आयु, ईश्वर ने उसके किये कर्मोनुसार अस्सी वर्ष की दी है। वह मनुष्य अपने जीवन में पूर्ण संयम से रहता है। योग, आसन, व्यायाम आदि करता है, भोजन पौष्टिक करता है, विचार सुन्दर रखता है, किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष की भावनानहीं रखता है सदैव प्रसनन चिन्त रहता है, उसकी आयु अस्सी से अधिक हो जायेगी। यदि वह साधारण रूप से रहता है तो उसकी आयु अस्सी ही रहेगी। और यदि निम्न स्तर से रहता है तो उसकी आयु कम हो कसती है। भोग का तात्पर्य यह है कि वह जीवन में क्या खायेगा, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा या नहीं, उसके सुख के साधन क्या हैं उसके जीवन में सुख–दुःख कैसे आवेंगे आदि। यह सब भोग में आता है। अच्दा जीवन बिताने से आयु की भांति भोग भी घटाया जा बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार मनुष्य के ऊपर पूर्वजनम के किये कर्मो का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है।

२. **माता-पिता का प्रभाव :** मनुष्य के ऊपर माता–पिता का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। जिस व्यक्ति के माता–पिता सयमी, निष्कपट, निष्छल, संस्कारित व उदार, प्रवृति के होते हैं जिनके जीवन में ईमानदारी हो, झूठ नहीं बोलते हों, सबसे सुन्दर व्यवहार करते हों, बच्चों को भी अच्दी शिक्षा देते हो, उनकी सन्तान अपने माता–पिता को देखकर वैसे ही बन जाती है। इसके विपरीत जिनके माता–पिता का जीवन है उनके बच्चे भी बेईमान, दुराचारी, दुष्ट, व कमज़ोर होते हैं। इस प्रकार माता–पिता का प्रभाव भी बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। उदाहरण के तौर पर श्री राम के ऊपर माता कौशल्या का और शिवाजी के ऊपर माता जीजीा बाई का पड़ा था।

३. **परिवार के सदस्यों का प्रभाव :** बच्चों पर माता–पिता के प्रभाव के साथ–साथ परिवार के अन्य सदस्यों का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। परिवार के चचा–चाची, ताई–ताऊ, दादा–दादी तथा उनकी सन्तान ज़िनके साथा बच्चा सदैव मिलता–जुलता रहता है, उनका प्रभाव भी बहुत पड़ता है। साथ ही रिश्तेदारों व पड़ौसियों का प्रभाव भी बहुत पड़ता है। बच्चे का आठ–दस वर्ष तक का जीवन अपने घर के सदस्यों के साथ अधिक बीतता है इसलिए घर का वातावरण अच्छा होगा तो बच्चे के चरित्र तथा स्वभाव प्रभाव पड़ेगा। अन्यथा बच्चे के चरित्र, स्वभाव व व्यवहार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

४. **बच्चे के साथियों व मित्रों का प्रभाव :** बच्चे के ऊपर उसके साथियों व मित्रों का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। यदि बच्चा अपने अच्छे माता–पिता व अच्दे परिवार में पलकर अच्दा है परन्तु बाद में उसको साथी व मित्र गलत मिल गये। बेईमान, झूठे व चरित्रहीन मिल गये, चौपड़ खोलने वाले, सिनेमा–फिल्म देखने वाले, जूआ खेलने वाले तथा अन्य प्रकार के गलत व अश्लील काम करने वाले मिल गये तो बच्चे पर उनकी कुसंगती का बुरा प्रभाव पड़ेगा और बच्चा उन्हीं के कुमार्ग पर चलने लगेगा। इसलिए बच्चे के माता–पिता तथा उसके अभिभावकों को बच्चे का बहुत ध्यान रखना चाहिए। उसके साथी मित्र कैसे हैं, वह कहाँ–कहाँ आता–जाता है। उससे मिलने वाले व्यक्ति कैसे हैं। इन सब बातों का ध्यान ज़रूर रखना चाहिए। यदि उसके साथी व मित्र अच्छे नहीं हैं तो उनसे दूर रखने के लिए किसी अच्छे गुरूकुल में भेज देना चाहिए ताकि वह कुसंगति से बच सकें।

५. **शिक्षा का प्रभाव :** बच्चा जिस स्कूल में पढ़ता है, उस स्कूल के शिक्षक यदि अच्छे नहीं है और यदि उसकी कक्षा के विद्यार्थी अच्छे नहीं हैं तो इन दोनों का प्रभाव बच्चे पर बहुत अधिक पड़ता है। स्कूल की पढ़ाई का भी बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। यदि बच्चों को इतिहास में राम, कृष्ण महात्मा चाणक्य, वीर शिवा जी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह, वीरसरकार, सुभाषचन्द्र बोस व महर्शिदयानन्द के जीवन पर कोई प्रकाश नही डालोगे तो बच्चों को अपने राष्ट्र व अपने इतिहास पर गौरव का आभाव कैसे होगा? यदि बच्चों को बाबर, हुमायुँ, अकबर, अंग्रेजों, का इतिहास और कांग्रेस का इतिहास ही पढ़ाया ज़ायेगा तो वह बच्चा देश के सच्चे इतिहास से तो अनभिज्ञ रहेगा ही, इस स्थिति मैं वह देश के इतिहास पर क्या गौरव का अनुभव करेगा? इसलिए बच्चों पर पढ़ाई का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता हैं।

देश की सही उन्नति व आदर्शभारत तभी बनेगा जब हमारी सरकार गुरुकुलों की तरफ विशेष ध्यान देकर उनको प्रोत्साहित करेगी और प्रत्येक भारतीय अपने बच्चे व बच्चियों को गुरुकुलों में भेजकर प्रसन्न व आनन्दित होंगे। यह प्रसन्नता की बात है कि आजकल गुरुकुलों में केवल संस्कृत में वेद तथा ऋषि–मुनियों कृत आर्षग्रन्थ ही नहीं प्रढ़ाये जाते बलिक उनके साथ विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल तथा कृषि व शिल्पकला सम्बन्धी शिक्षा भी दी जाती है जिससे गुरुकुलों के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बन सकें। मेरा स्वयं का यह विचार है कि यदि भारत को पुनः विश्व गुरु के शीर्श स्थान पर सुशोभित करना चाहते हो तो पहले की भाँति सरकार को गुरुकुलों की तरफ विशेष ध्यान देना पड़ेगा और जब गुरुकुलों में पढ़े हुए विद्यार्थियों के हाथों सरकार की बाग–डोर आ जायेगी तभी भारत का चरित्र उमर कर विश्व के सामने आवेगा और तभी भास्त चरम उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्य विश्वगुरू के उच्चपद को प्राप्त कर सकेगा। 'खुशहाल' की आखें भारत के उस गौरपूर्ण समय की प्रतीक्षा में हैं आशा है अच्छे नेत्तृत्व में वह समय शीघ्र ही आवेगा।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण

✍ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

प्रकृति में वायु, जल, मिट्टी, पेड़–पौधे, जीव–जन्तुओं एवं मानव का एक सन्तुलन विद्यमान है, जो हमारे अस्तित्व का आधार है। जीवनधारी अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं। सच पूछा जाय तो आधुनिक मानव सभ्यता को प्रकृति द्वारा प्रदान की गई सबसे मूल्यवान निधि पर्यावरण है, जिनका संरक्षण एक बड़ा दायित्व है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में यह आवश्यक है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त इस निधि का बुद्धिमत्ता पूर्ण ढंग से उपयोग किया जाय और आने वाली पीढ़ी को भी इसके प्रति जागरूक बनाया जाए। पर्यावरण चेतना व पर्यावरण संरक्षण आज के युग की प्रमुख मांग है। शाब्दिक अर्थों में हमारे चारों ओर छाया आवरण ही पर्यावरण है। प्राचीन काल में भारतीय ऋषि–मुनियों ने पंचभौतिक तत्वों को देवों का रूप दिया था। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने पर्यावरणीय चेतना को जनजीवन से जोड़ दिया था। उनकी सूझबूझ गहन एवं व्यापक थी। प्रकृति के सहचर्य में ही हमारी संस्कृति फली–फूली। वनों में ही उपनिषदों की रचना हुई। विभिन्न जीवों को हमने विभिन्न देवताओं के वाहन के रूप में स्वीकार कर उनकी महत्ता को स्वीकार कर उनकी महत्ता को स्वीकार किया है। शंकर जी का नंदी, गणेश जी का चूहा, दुर्गा का सिंह, लक्ष्मी का उल्लू, विष्णु का गरुड़, पृथ्वी का शेषनाग, सरस्वती का हंस, यमराज का भैंसा, कार्तिकेय का मोर, इन्द्र का गज, भैरव का कुत्ता आदि वाहन इस बात के प्रतीक हैं। 'जीवो जीवस्य भोजनम्' के अनुसार इनमें कुछ एक दूसरे के भक्षक भी हैं। फिर भी उन्हें समभाव में देखा गया है। जल को वरुण देवता के रूप में माना गया है। अग्नि को देवता माना है। सागर को देव मानकर उसकी पूजा अर्चना की जाती है। सप्त नदियाँ–गंगा, यमुना, कावेरी, चुम्बल, सिन्धु एवं ब्रह्मपुत्र आदि विख्यात रही हैं। प्राचीन काल के अनुसार नदियों, तालाबों में मल विसर्जन एक नैतिक अपराध माना जाता था। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने एक स्थान पर लिखा है भारतीय मानव जीवन को जितना संस्कारित किया है ज्ञान और कर्म के क्षेत्र में जो निर्माण है, उसकी समग्र कथा ही भारतीय संस्कृति का परिचायक है। संस्कृति के रूप में जनता और पृथ्वी के घनिष्ठ सम्बन्ध ही हमारे जीवन के रूप हैं। भारतीय ऋषि–मुनियों ने पर्यावरण के प्रत्येक घटक और उपकरण को धर्म के साथ बाँध दिया ताकि उसका पालन चिरकाल तक किया जा सके। जैन धर्म में पर्यावरण शुद्धि पर बड़ा ध्यान दिया गया है। जीव–जन्तुओं को मारना, जहाँ घोर अपराध माना गया है, वहाँ पानी को भी कीटाणु रहित कर पीने का प्रावधान है। महाभारत के अनुसार महाराज शिवि ने एक कबूतर को बचाने के लिए अपना जीवन बलिदान देने का संकल्प लिया था। लंका में सीता ने 'अशोक वृक्ष' के नीचे अपना स्थान बनाया था। अधिकांश भारतीय जन अपने मृतक स्वजनों को दाह संस्कार करते हैं, जिससे सभी प्रकार के हानिकारक जीवाणु भी नष्ट हो जाते हैं जबकि भूमि में गाड़ने या जल प्रवाह में यह सम्भव नहीं होता। भारतीय संस्कृति में स्वच्छता को प्राथमिकता दी गई है। ब्रह्ममुहूर्त में उठने का नियम बनाया गया है। शौच, मुखमार्जन, दंतमंजन, स्नान, पूजा–अर्चना, सूर्योपासना, गायत्री साधना, यज्ञकर्म आदि भारतीय संस्कार के अभिन्न अंग रहे हैं इससे मन व शरी पवित्र रहता है। शौच के लिए दूर जंगल में जाने से प्रातः कालीन भ्रमण हो जाता है व कब्ज ह्रदय रोग आदि से मुक्ति मिलती है। रोज बर्तन मांजना, चौका चूल्हा साफ करना, नंगे पैर भोजन करना, अलग पात्र में भोजन करना, पानी पीने के लिए सबके लिए अलग पात्र रखना, पानी को बार–बार छानना, अग्नि को भोग लगाना आदि पर्यावरण संरक्षण के प्रतीक हैं। एक कवि ने कहा है– जीवन, तन, मन, वचन, धन, भोजन, जन व्यवहार, अति निर्मल सुपवित्र हो, वस्तु सभी आचार। जगत् कल्याण के लिए पंच महाभूतों अर्थात् पर्यावरण के पांचों तत्वों को सही स्थिति, उनकी शुद्धता तथा उनका संतुलन आवश्यक है। वेदों में औषधि एंव वृक्षों की प्रशंसा में अनेक मंत्रों की रचना की गई है। ऋग्वेद में सस्वती नदी का गान किया गया है। यह पर्यावरण के प्रति आस्था का प्रतीक है। उपरिग्रहवाद, अणुव्रत, समता, स्वच्छता, अहिंसा, सेवा, क्षमता, आत्मचिंतन, सत्य विवेक एवं स्वाध्याय जैसे गुण मानव को पर्यावरण संरक्षण के प्रति उत्तरदायी बनाते हैं। प्रकृति से प्रेम व उसका सहचर्य ही मानव को पर्यावरण प्रदूषण से बचा सकता है। अन्ततः भारतीय संस्कृति सदैव से पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती रही है।

कोई राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष नहीं हो सकता

आचार्य डॉ. संजयदेव

धर्मशास्त्रकार महर्षि मनु ने धर्म के दस लक्षण कहे हैं–

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं
शौचचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं
धर्मलक्षणम्।।

धैर्य धारण करना, क्षमा करना अर्थात् अपने से निर्बल ने कोई भूल कर दी है तो उसे सहन कर लेना, उसको सुधार कर लेने के लिए कह देना। दम–स्वयं पर नियन्त्रण करना। **अस्तेय**-चोरी का त्याग। **शौच**-अन्दर और बाहर की पवित्रता। **इन्द्रिय-निग्रह**–अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण। धीः–बुद्धि या विवेक। **विद्या**-पदार्थो की जानकारी। **सत्य**-सत्य व्यवहार करना। जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, मानना और लिखना सत्य कहाता है। **अक्रोध**-आक्रोश और आवेश में आकर कोई अनुचित कार्य न कर बैठना। ये दस धर्म के लक्षण बताए गए हैं। जिस तत्व में ये दस लक्षण हैं वो धर्म है। और ये धर्म सार्वभौम है। दुनिया का किसी भी हिस्से का रहने वाला व्यक्ति हो, दुनिया का किसी भी मत–मजहब और पन्थ को मानने वाला व्यक्ति हो, उसके लिये के इन दस लक्षणों को अपने जीवन में धारण करना अनिवार्य है। इन धर्म के कलक्षणों के बिना रहा ही नहीं जा सकता। ये सार्वभौम हैं

ये बताया था मैंने कि धर्म और सम्प्रदाय में अन्तर है। आज धर्म को और सम्प्रदाय को एक मान लिया गया है। मोटे रूप में यह समझ लें कि धर्म वो होता है जो सबके लिये समान रूप से आवश्यक होता है। सबके लिये समान रूप से अनिवार्य होता है। जो बात सबके लिये होती है वो धर्म होता है और जो बात व्यक्तिगत होती, है कुछ लोगों के लिये होती है वह सम्प्रदाय, मत, मजहब और पन्थ होती है। आप अपने परिवेश में रहने वाले, अपने समाज में या परिवार में रहने वाले लोगों के साथ मित्र की दृष्टि से व्यवहार करते हैं, ये धर्म है। आप परमात्मा को किस रूप में मानते हैं? साकार रूप में मानते हैं या निराकार रूप में मानते हैं ये धर्म नहीं है। ये सम्प्रदाय है। आप मूर्ति को भगवान मानकर उसकी पूजा करें या निराकार परमात्मा की उपासना करें। ये सम्प्रदाय के अन्तर्गत आता है। आप पूरब की तरफ मुख करके उपासना करें या पश्चिम की ओर मुख करके उपासना करें। ये आपका व्यक्तिगत विषय है। इसका धर्म से कोई लेना–देना नहीं है। आप परमात्मा को माने या न मानें। आप आस्तिक हैं या नास्तिक हैं, यह आपका व्यक्तिगत विषय है।

धर्म तो यह कहता है कि आप परमात्मा को मानते हैं या नहीं मानते हैं यह नहीं पूछा जा रहा है। बल्कि प्रश्न तो यह है कि आप परमात्मा के बन्दों से कितना प्यार करते हैं,? खुदा के बन्दे तो हजारों जंगलों में फिरते हैं मारे मारे। मैं उसका बन्दा बनूंगा जिसको परमात्मा के बन्दों से प्यार होगा। जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा। आप प्राणियों में, जीवों में कितनी मित्र भावना की दृष्टि रखते हैं, कितना अच्छा व्यवहार करते हैं वो धर्म है।

आज नई प्रकार की भ्रांतियाँ हैं धर्म के विषय में। एक तो यह कहा जाता है कि 'धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र।' भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। राजनीति को धर्म से अलग करो और धर्म को राजनीति से अलग करो। धर्म में राजनीति नहीं होनी चाहिए या राजनीति में धर्म नहीं होना चाहिए। और धर्म के नाम पर वोट मांगना अपराध है। धर्म के नाम पर वोट मांगना ठीक नहीं है। वो साम्प्रदायिकता है। सम्पद्राय को और धर्म को दोनों को घाल–मेल कर दिया गया है। वास्तविकता तो यह है कि 'धर्म' का पर्यायावाची कोई शब्द हो ही नहीं सकता। कोई राष्ट्र न तो धर्मनिरपेक्ष हो सकता है और न होना चाहिए। अच्छा, धर्म के नाम पर तो वोट नहीं मांगना चाहिए। धर्म के नाम पर वोट मांगने का मतलब यह है कि मैं अपने कर्त्तव्यों का सच्चाई से, ईमानदारी से निर्वहन करूंगा। मैं निर्बलों को नहीं सताऊंगा। मैं दुष्टों को दण्ड दूंगा और देश की ठीक–ठीक प्रकार से सेवा करूंगा। धर्म के नाम पर वोट मांगने का यह तरीका है। और आप कहते हैं कि धर्म के नाम पर वोट मत मांगो। तो क्या ये कहें कि मैं निर्बलों को सताऊंगा, देश पर अत्याचार करूंगा, मैं अपने कर्त्तव्यों का पालन सच्चाई से और ईमानदारी से बिल्कुल नहीं करूंगा। और नए–नए अनेक प्रकार के घोटाले करूंगा। तो क्या ये जो अधर्म आचरण है इस पर वोट मांगना चाहिए? जिस दिन यह आपकी विचारधारा बन जाएगी, उस दिन राष्ट्र समाज और परिवार को कोई भी नहीं चला सकता। धर्म को सम्प्रदाय का पर्यायवाची मान लिया गया है। इस भ्रांति से यह भूल हो रही है। वस्तुतः तो राजनीति में धर्म आवश्यक है। जिस दिन राजनीति से धर्म निकल जाएगा, शासन से धर्म निकल जाएगा उस दिन सारी अव्यवस्था हो जाएगी। सारा राष्ट्र अस्त–व्यस्त हो जाएगा और सारे राष्ट्र में, समाज में अराजकता फैल जाएगी।

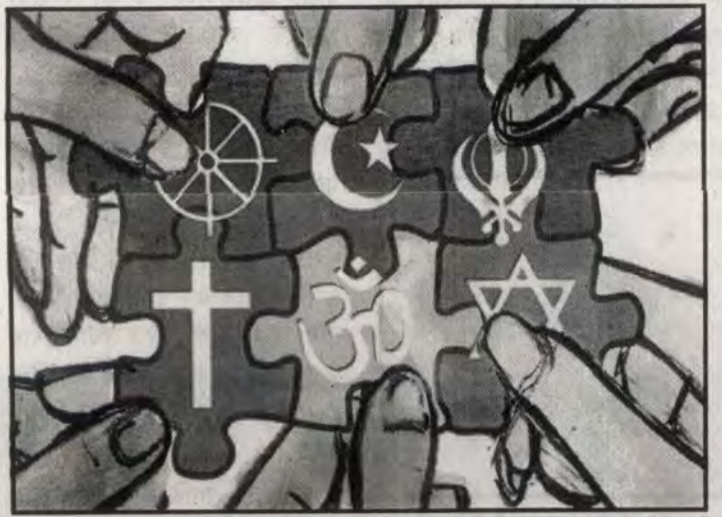

परिवार की एकजुटता के लिये, समाज की एकजुटता के लिये, राष्ट्र की एकजुटता के लिये धर्म अनिवार्य तत्व है। महाराज मनु ने धृति, क्षमा, दम, अस्तेय आदि–आदि जो दस लक्षण बताए हैं, ये किसी सम्प्रदाय की बात कहाँ कर रहे हैं? इनको यदि अपने जीवन में नहीं ढालोगे तो राष्ट्र को और समाज को कैसे चला पाओगे? भला अहिंसा के बिना, सत्य के बिना, करुणा के बिना, मैत्री के बिना, मुदिता में बिना, दया के बिना, मित्र भाव के बिना कोई परिवार, कोई राष्ट्र, कोई समाज कैसे चल सकता है। धर्म वो तत्व है जो परिवार, समाज और राष्ट्र को जोड़कर चलता है। पति और पत्नी में जो रिश्ता है वो धर्म का रिश्ता है। दो अनजाने व्यक्ति साथ–साथ जीने का संकल्प लेते हैं, उसके बीच में जो सेतु का कार्य करता है वो तत्व ही तो धर्म है। नहीं तो आज जो रोज–रोज तलाक हो रहे हैं इसका कारण है कि आपने उस धर्म के सेतु को हटा दिया। धर्म को अपने जीवन से निकाल दिया इसी कारण परिवार टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है और राष्ट्र में अव्यवस्था हो रही है। आतंकवादी सर उठा रहे हैं। क्योंकि आपने कह दिया कि मेरा देश धर्मनिरपेक्ष है। धर्म से कोई सरोकार नहीं है। चाहे कोई अन्याय करे, चाहे कोई अत्याचार करे, चाहे कोई खून की नदियाँ बहाए, निर्बलों को सताए, आपको तो धर्म से कोई सरोकार है नहीं। आपका देश तो धर्मनिनरपेक्ष राष्ट्र है।

जब तक इस देश में धर्म का शासन रहा, राजनीति पर धर्म का अंकुश रहा, तब तक इस देश में सुख का साम्राज्य था, शान्ति का साम्राज्य था सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त। दो सौ करोड़ वर्ष पुरानी संस्कृति है हमारी। इतनी पुरानी संस्कृति है भारतवर्ष की। सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त इसदेश का चक्रवर्ती साम्राज्य सारे संसार पर रहा था। क्योंकि उस समय तक राजनीति पर, शासन पर, शासक पर, राजा पर और प्रजा पर धर्म का अंकुश था। इसी कारण रामायण में यह आता है कि उस समय कोई भी भूखा नहीं होता था। कभी अकाल नहीं पड़ता था। समय पर बरसात होती थी। कोई भी असमय में मरता नहीं था। असमय में बूढ़ा नहीं होता था। क्योंकि सब अपने–अपने कर्तव्यों का निष्ठा से निर्वहन करते थे। अपने–अपने कर्तव्यों का आचरण करते थे। और जिस समय से धर्म को अपने जीवन से कुछ निकाल दिया, तो जैसा मैंने बताया था कि शरीर में ८० प्रतिशत मात्रा जल की है, उसमें कुछ भी कमी होने पर तुरन्त प्यास लगती है। आत्मा का स्वभाव तो १०० प्रतिशत धर्म है। आत्मा के इस १०० प्रतिशत स्वभाव में से हमने धर्म को कुछ प्रतिशत निकाल दिया। इसीलिए आज देश में, समाज में और परिवार में आज अव्यवस्था है। परिवार टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है और देश टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है और देश टूट चुका है और भी टूटने की कगार पर है अखण्ड भारत कितना था!

क्योंकि आपका देश धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। धर्म से कोई सरोकार नहीं। सच्चाई से, ईमानदारी से कोई सरोकार नहीं। जबकि सत्य तो ये है कि ये धरती, ये राष्ट्र सत्य के आधार पर, धर्म के आधार पर ही टिका हुआ है। आज भी आप ये जा कहते हैं कि धर्म के काम करने से निर्वाह नहीं होता, सच्चाई से आजकल निर्वाह नहीं होता। जबकि सत्य ये है कि निर्वाह तो धर्म पर चलने से ही होता है। जब तक इस धरती पर धर्म है, इस राष्ट्र में, इस समाज में, इस परिवार में तब तक ही नियन्त्रण है। तब तक ही संयम है, तब तक व्यवस्था है। तभी तक राज्य का भाव है, तभी तक राष्ट्र का भाव है।

आज भी न्यायालय में कोई प्रतिज्ञा की जाती है, कोई शपथ ली जाती है तो साक्षी गीता पर, कुरान पर या बाइबिल पर हाथ रखकर यह तो नहीं कहता कि मैं झूठ निष्ठापूर्वक यह शपथ लेकर कहता हूँ कि मैं जो कुछ भी कहूँगा झूठ कहूँगा, इससे अतिरिक्त कुछ न कहूँगा। कोई भी न्यायाधीश उसकी बात को नहीं मानेगा। साक्षी को शपथ सत्य की ही लेनी पड़ेगी। विधायक से लकर राष्ट्रपति तक को शपथ सत्य की ही लेनी पड़ेगी। यही कहना पड़ेगा कि मैं सत्य निष्ठापूर्वक प्रतिज्ञा लेता हूँ कि मैं जो कुछ कहूँ सच कहूँग, सच के अतिरिक्त कुछ न कहूँगा। भले वो झूठ ही बोल रहा हो। झूठ कैसे चलता है? सत्य का आवरण ओढ़कर ही झूठ चलता है। बिना सत्य का आवरण ओढ़ाए झूठ भी नहीं चलता। बिना धर्म का आवरण ओढ़ाए पाप भी नहीं चल सकता। आप वोट मांगेगे कि मैं अपना कार्य अच्छाई के साथ करूंगा, अपना कार्य पूरी निष्ठा से, सच्चाई से, ईमानदारी से करूंगा। भले ही आप कितनी ही बदमाशी करते रहें, कितनी ही गुण्डागर्दी करते रहें, कितने ही अत्याचार करते रहें, कितने ही अन्याय करते रहें। पर आपने वोट तो अच्छाई के नाम से ही मांगने हैं। तो आप कैसे कह सकते हैं कि धर्म के बिना ही काम चलता है। आजकल धर्म के नाम से काम नहीं चलता। आजकल सच्चाई से और ईमानदारी से काम नहीं चलता। काम तो ईमानदारी और सच्चाई से ही चलता है।

धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र न होता है, न होना चाहिए, न कभी हुआ है। इस देश की आजादी, हजारों वर्षो तक ये गुलाम रहा। और मैं तो ये कहता हूँ यह देश केवल गुलाम नहीं रहा। इस देश का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं, इस देश का इतिहास गुलामी के विरुद्ध संघर्ष का इतिहास है। जहाँ आक्रमणकारी सिकन्दर है वहाँ पोरस भी है। जहाँ विदेशी अत्याचारी, अन्यायी अकबर है, वहाँ महाराणा प्रताप भी है। जहाँ औरंगजेब है वहाँ शिवाजी भी है। जहाँ अंग्रेज हैं वहाँ चन्द्रेशखर, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, सुभाषचन्द्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल आदि आदि अनेक क्रान्तिकारी भी हैं, जिन्होंने धर्म से ओतप्रोत होकर अपने जीवन को स्वाहा कर दिया

शेष पृष्ठ 10 पर

कौन थे आर्य? क्या अब बदलेगा इतिहास?

राजीव चौधरी

आर्य कौन थे? पहली बात तो यह कोई प्रश्न नहीं है। किन्तु सन १६२० के बाद से इसे प्रश्न बनाकर सबसे पहले अंग्रेज इतिहासकारों और उनके बाद कुछ भारतीय इतिहासकारों द्वारा इतना

उलझाया गया कि आधुनिक पीढ़ी के सामने आर्य कौन थे? कहाँ से आये थे? वह भारतीय थे या बाहरी थे? वह किस संस्कृति के पुजारी थे, उनका मूल धर्म क्या था? आदि–आदि सवाल पर सवाल खड़े किये गये। धीरे–धीरे काल बदल रहा है, देश में सरकारें बदल रही हैं, इतिहासकार बदले, सोच बदली यदि कुछ नहीं बदला.सिर्फ एक सवाल कि आर्य कौन थे?

.हाल ही में हरियाणा के राखीगढ़ी से मिले ४,५०० साल पुराने कंकाल के "पेट्रस बोन" के अवशेषों के अध्ययन का पूरा परिणाम सामने आने जा रहा है। एक बार फिर सवाल यही होगा कि क्या हड़प्पा सभ्यता के लोग संस्कृत भाषा और वैदिक हिंदू धर्म की संस्कृति का मूल स्रोत थे? असल में पुरातत्ववेत्ता तथा पुणे के डेक्कन कॉलेज के कुलपति डॉ. वसंत शिंदे की अगुवाई वाली एक टीम द्वारा २०१५ में की गई खुदाई के बहुप्रतीक्षित और लंबे समय से रोककर रखे गए परिणामों में ऐसे अब खुलासे होने वाले हैं। एक कंकाल को आधार बनाकर एक बार फिर यही साबित करने का प्रयास किया जायेगा कि आर्य बाहरी और हमलावर थे।

क्योंकि जब १६२० के दशक में सिंधु घाटी सभ्यता पहली बार खोजी गई थी, तब अंग्रेज पुरातत्वविदों ने इसे तत्काल पूर्व–वैदिक काल की सभ्यता–संस्कृति के सबूत के रूप में स्वीकार लिया और उन्होंने आर्य आक्रमणकारियों का एक नया सिद्धांत दिया और कहा कि उत्तर–पश्चिम से आए आर्यों ने हड़प्पा सभ्यता को पूरी तरह से नष्ट करके हिंदू भारत की नींव रखी।

हालाँकि वसंत शिंदे यह मत रखते हैं कि जिस तरह से राखीगढ़ी में समाधियां बनाई गई हैं वह प्रारंभिक वैदिक काल सरीखी है। साथ ही वह ये भी जोड़ते हैं कि राखीगढ़ी में जिस तरह से समाधि देने की परंपरा रही है वह आज तक चली आ रही है और स्थानीय लोग इसका पालन करते हैं। लेकिन इसके साथ ही वह जोड़ते है कि यह वही काल है जिसमें आर्यों का भारत में प्रवेश माना जाता है, जैसा कि आर्य आक्रमण सिद्धांत मानने वाले निष्कर्ष निकालते हैं।

चलो एक पल के लिए हम स्वीकार भी लें कि पश्चिमी विद्वान वास्तव में सही हैं और १८०० ईसा पूर्व के बाद आर्यों ने भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया और यहाँ के मूलनिवासियों पर हमला कर विशाल भूभाग पर कब्जा कर लिया। किन्तु ध्यान देने योग्य है कि राखीगढ़ी या हड़प्पा में किसी तरह की हिंसा, आक्रमण, युद्ध का संकेत नहीं मिलता है। किसी तरह के विनाश का संकेत नहीं है और कंकालों पर किसी तरह की चोट का निशान नहीं है।

दूसरा आर्य बाहरी और वेद को मानने वाले लोग थे। यदि यह एक पल को यह स्वीकार कर भी लिया जाये तो आर्य कहाँ से आये और जहाँ से वह आये थे आज वहां वैदिक सभ्यता के लोग क्यों नहीं रहते हैं? क्या वहां एक भी वैदिक सभ्यता का नागरिक नहीं बचा था?

आज मात्र एक कंकाल के डीनए से यह साबित किया जा रहा है कि उसका डीएनए दक्षिण भारतीय लोगों से काफी मिलता है पर क्या ऐसा नहीं हो सकता कि यह कंकाल किसी व्यापारी, भ्रमण पर निकले किसी जिज्ञासु अथवा किसी राहगीर का नहीं होगा? यदि कल दक्षिण भारत में मिले किसी कंकाल का डीएनए उत्तर–भारत के लोगों से मिलता दिख जाये तब क्या यह सिद्धांत खड़ा कर दिया जायेगा कि आर्य मूल निवासी थे और द्रविड़ हमलावर उन्होंने समुद्र के रास्ते हमला किया और इस भूभाग पर कब्जा कर लिया?

यह एक काल्पनिक मान्यता है कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया, उन्होंने निश्चित रूप से भारत पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि उस समय भारत था ही नहीं वास्तव में भारत को एक सभ्यता के केन्द्र के रूप में आर्यों ने ही विकसित किया था। पश्चिमीपुरातत्ववेत्ता एक तरफ तो आर्यों के भारत के बाहर से आने की सिद्धांत का समर्थन करते हैं, दूसरी ओर उनके अनुसार द्रविड़ भाषा बोलने वाले सिंध के रास्ते भारत में प्रवेश कर रहे थे तो आखिर भारत के मूल निवासी थे कौन?

तीसरा आर्य बाहरी थे, उनकी भाषा संस्कृत थी। तो आज यह भाषा भारत के अलावा कहीं ओर क्यों नहीं दिखाई देती? क्यों उत्तर और भारत दक्षिण भारतीयों के धार्मिक ग्रन्थ, धार्मिक परम्परा एक हो गयी? अरबों, तुर्कों अफगानियों ने भारत पर हमला किया अनेक लोग यहाँ बस भी गये तो क्या उनकी भाषा, उनका मत उनके देशों से समाप्त हो गया?

आज सामाजिक और धार्मिक स्तर पर वियतनाम, थाईलेंड, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, सुमात्रा, म्यांमार आदि देशों में भारतीय वैदिक परम्परा के चिन्ह मिलते हैं, क्या इन देशों में भी आर्यों ने आक्रमण किया? हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि आर्य, चाहे वे मूल रूप से मंगल के निवासी हों या फिर भारत के, भारतीय सभ्यता के निर्माता वही थे। इस उल्लेखनीय सभ्यता और सांस्कृतिक एकता को भारतीय सभ्यता के रूप में जाना जाता है, इसकी जड़ें वैदिक संस्कृति में थीं जिसकी खनक पूरे देश में सुनाई देती है।

आखिरकार, यदि वैदिक लोग भारत के लिए विदेशी हैं क्योंकि वे १८०० ईसा पूर्व में कथित रूप से भारत में प्रवेश कर चुके थे, तो फारसियों ने भी १००० ईसा पूर्व के बाद फारस में प्रवेश किया था तो क्या वह भी फारस के लिए विदेशी हैं? २००० ईसा पूर्व के बाद ग्रीस में प्रवेश करने वाले ग्रीक, वहां के लिए विदेशी हैं? फ्रांसीसी फ्रांस के लिए विदेशी हैं क्योंकि उन्हें भी पहली शताब्दी ई. पू. में रोमन विजय के दौरान लैटिन उपनिवेश वादियों द्वारा लाया गया था? यदि सब विदेशी हैं तो क्या आज समस्त संसार में कोई भी मूल निवासी नहीं है। इससे पता चलता है कि यह सब हम भारतीय हिंदुओं को अपराधबोध से ग्रसित करने के लिए,

शेष पृष्ठ 11 पर

विश्व की प्रथम आर्य समाज जो २४ घण्टे नित्य खुली रहती है!

बुलन्दशहर २ अक्टूबर। म्यांमार (बर्मा) में जन्में, आर्य समाजी परिवार के सदस्य, ७५ वर्षीय इन्द्र देव गुलाटी ने अपने निवास स्थान पर, नगर आर्य समाज की, आज स्थापना की। यह १६६६ से अब तक का छठा स्थान है। इस नगर आर्य की, अपने लम्बे अनुभव के आधार पर निम्न विशेषताएँ एवं विभिन्नताएं रखी गई हैं जो इस प्रकार हैं:–

१. ईश्वर निराकार है। उसका कोई आवास नहीं है। वह सर्वत्र है।
२. जब ईश्वर निराकार है तब उसे किसी आवास–पूजा–स्थल–कमरे आदि में बन्द करके कैसे रखा जा सकता है?
३. उसे नित्य अथवा साप्ताहिक रूप से कमरे में बन्द करके कैसे रखा जा सकता है?
४. यहां ईश्वर की आराधना, पूजा, अर्चना, हवन, सत्संग, वेद पाठ, सत्यार्थ प्रकाश का पठन, पाठन, सिंह गर्जना, दयानन्द दिव्य दर्शन, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि, सत्यार्थ सौरभ, वैदिक संसार, आर्य जगत, आत्म शुद्धि पथ, वैदिक सार्वदेशिक, रमदा वैदिक ज्ञान माला, वैदिक पथ, षड् दर्शन परिचय, खुशहाल लेखावली आदि पुस्तकें पठन पाठन के लिए उपलब्ध हैं।
५. सुबह–सांय सन्धया करके वैदिक भजन गाये जा सकते हैं।
६. कभी –कभी हवन–ऋषि लंगर हो सकता है।
७. वैदिक धर्मी अखबारों–पत्रिकाओं के ग्राहक बनाए जाते हैं।
८. देश की समस्यायों तथा वैदिक धर्मी नेताओं पर लेख लिख कर जनता को सावधान किया जाता है।
६. संगठन का सदस्यता शुल्क रु० ६०–०० वार्षिक है।
१०. दान–सहायता–सहयोग स्वीकार है।
११. फिलहाल संस्कार कराने की व्यवस्था नहीं है।
१२. जो भी अनुदान–सहायता–शुल्क–सहयोग प्राप्त होगा वह अखिल भारत हिन्दू महासभा को हर महीने भेजा जाएगा ताकि दिल्ली वालों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो और वह गांधी वादी–सेकुलर–तुष्टीकरण वादी दलों का मुकाबला करके हिन्दू हितों की रक्षा कर सके।
१३. अतः सहयोग करने में देरी की आवश्यकता नहीं है।

इन्द्र देव गुलाटी, बुलन्दशहर

८ दिसम्बर पुण्य तिथि पर विशेष

भाई परमानन्द जी आज के सन्दर्भ में

देश की राजनीतिक स्थिति पर दृष्टि डालें तो भाई परमानन्द जी की याद आती है। उन्होंने यह चित्र बरसों पहले ही देख लिया था। आज देश में जो साम्प्रदायिकता उभर रही है, यह उन्हीं घटनाओं के विकासक्रम की चरम सीमा है, जिनकी ओर भाई जी राष्ट्र का ध्यान बार–बार आकृष्ट करते रहे। उन्हें इस संसार से गए ४० वर्ष से भी अधिक समय हो गया और बात वहीं की वहीं है। महात्मा गाँधी ने अपना पूर्ण जीवन हिन्दू–मुसलमान मैत्री हेतु लगा दिया। अंत में इसी मैत्री की बलिवेदी पर महात्मा जी की आहुति चढ़ी।

साम्प्रदायिक स्थिति का नजारा आज भी वही जो १९३० में था। कांग्रेस ने उन दिनों नेहरू रिपोर्ट और जिन्ना की १४ माँगों को स्वीकार कर लिया था।.... १९४२ में साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा की गई थी, जिसके आधार पर ही आगे चलकर पाकिस्तान की नींव रखी गई। १९४२ में क्रिप्स मिशन आया। इसी के प्रस्तावों के सन्दर्भमें राजा जी का फार्मूला प्रस्तुत किया गया। १९४५ में हिन्दू और मुसलमानों के प्रतिनिधित्व को प्रायःसमान अधिकार मान्य लिया गया। १९४६ में कैबिनेट मिशन आया और १९४७ में भारत का विभाजन हो गया। यदि हिन्दुआ ने भाई जी की आवाज सुनी होती और उनके प्रति अपमानजनक उपेक्षावृत्ति न अपनाई होती, तो भारत का इतिहास कुछ और होता!... बताया जाता है कि अपने जीवन के अंतिम दिनों में गाँधी जी बहुत ही दुःखी थे। यद्यपि देश स्वाधीन हो गया था, परन्तु इससे उन्हें हार्दिक उल्लास नहीं हुआ। विभाजन के समय भीषण रक्तपात हुआ और अमानुषिक अत्याचार हुए। हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर द्वेष और भी अधिक बढ़ गया। परन्तु यह महसूस नहीं किया गया, कि जो नीति गाँधी जी की रही। इसका परिणाम इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो सकता था। गाँधी जी के निकट सूत्रों ने एक बार बताया था कि गाँधी जी को यह महसूस हो गया था कि भारत कांग्रेस के प्रयत्नों से स्वतंत्र नहीं हुआ। कांग्रेस के सब प्रयत्न १९४२ में विफल हो चुके थे और 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन कुछ ही दिनों में कुचल दिया गया था।.... जब अंग्रेज इस देशव्यापी आन्दोलन को इस सरलता से दबा सके, तो इसके बाद के आन्दोलनों को भी कुचलकर रख सकते थे।....

१९४६ के विश्वयुद्ध में जर्मनी और जापान के पराजित होने के समय भारतीय स्वाधीनता के लिए किए जाने वाले सब प्रयत्न विफल हो गए। इसके बाद अंग्रेजों की शक्ति भी जर्जर होने लगी थी। अमेरिका और रूस विश्व की दो महान शक्तियों के रूप में उभर आए थे। इन दोनों शक्तियों ने ब्रिटेन पर यह दबाव डाला था कि वह अपने साम्राज्य की दुकान को समेट दे।....

ब्रिटेन आर्थिक दृष्टि से भी दिवालिया हो चुका था और अमेरिका का कर्जदार बन गया था। इन दोनों शक्तियों के दबाव में आकर ही ब्रिटेन को एक–एक करके अपने सभी उपनिवेशों को स्वतंत्र करना पड़ा था। कांग्रेस ने शोर मचाकर यह श्रेय लेने का प्रयास किया कि उनके अहिंसक सत्याग्रह के फलस्वरूप देश आजाद हुआ है। ब्रिटेन ने जाते–जाते भारत को विभाजित कर दिया और जिन लोगों के हाथ में उनके जाने के बाद सत्ता आई उन्होंने भी राष्ट्रीय एकात्मकता की ओर उचित ध्यान नहीं दिया।

राष्ट्रीय एकता और भावनात्मक एकता का शोर मचाते हुए अलगाववाद की शक्तियों को ही प्रोत्साहित किया। जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता और भाषावाद से देश की एकता के लिए भयानक खतरा उभर आया। सारे देश के लिए समान कानून भी न बनाया जा सका।....

कश्मीर में मुस्लिम साम्प्रदायिकता, पंजाब में सिख साम्प्रदायिकता और उत्तर–पूर्वी राज्यों में ईसाई साम्प्रदायिकता ने भयंकर रूप धारण कर लिया। जन्म जाति और सम्प्रदाय के आधार पर आरक्षण की नीतियों ने संयुक्त राष्ट्रीयता को स्वप्न बनाकर रख दिया है। अब विदेशों से आने वाले धन की सहायता से पादरी और मौलवी हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उनकी संख्या को कम करने के अभियान में जुट गए। इससे यह प्रश्न उभरते हैं कि.... क्या यह किसी नीति की उपेक्षा का फल तोा नहीं है? क्या हमारे सामने अब भी बचाव का कोई रास्ता है? धर्मनिरपेक्षता की भ्रान्ति के अन्तर्गत अल्पसंख्यकों को प्रसन्न और पृथक रखने की सरकार की नीति से जिस भ्रमजाल का निर्माण हुआ है, उससे मुक्त होना प्रायः असंम्भव है। भाई जी कहा करते थे कि हिन्दू को अपने मित्र और शत्रु की पहचान नहीं। वास्तव में हिन्दुस्तान में स्थिति यह रही है कि जब यहाँ पर मुसलमान अपना राज्य जमाने में सफल हो गए तो उन्होंने अपने राष्ट्र का विस्तार करना आरम्भ कर दिया। इसके लिए वह सभी प्रकार का उचित और अनुचित ढंग अपनाने लगे। तत्कालीन हिन्दुओं में से राष्ट्रीय भावना तो निकल गई थी। उन्हें पता ही नहीं था कि राष्ट्र क्या बला है? उनके दिमागों में केवल यही बात रह गई थी कि वे राजपूत, कायस्थ ब्राह्मण, मराठे और पंजाबी हैं। मुसलमानों को भी उन्होंने एक जाति ही समझा। महात्मा गाँधी अथवा ब्रह्मसमाज के प्रवर्तक राजा राममोहन

शेष पृष्ठ ११ पर

देश का अन्नदाता एक चक्रव्यूह में

'**भारत** में आजादी के बाद से अब तक चार से पाँच लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं और यह सिलसिला आज तक भी बदस्तूर जारी है– क्या यह केवल एक समाचार ही हम सभी भारतीयों के लिए शर्म से सिर नीचा कर देने के लिए काफी नहीं है। **एक तरफ तो हम चाँद की तरफ रॉकेट भेज कर दुनिया के विकसित देशों की कतार में गिने जाने का दावा करते हैं दूसरी तरफ हमारे किसान बेबस होकर रोजाना आत्महत्या कर रहे हैं।** भारत का परिश्रमी किसान जो अपनी मेहनत के दम पर १२५ करोड़ से ज्यादा लोगों के लिए खाना जुटा रहा है, उसके साथ हमारी सरकारों का ऐसा सलूक एक अपराध से कम है क्या? बेशक हमारे नेता देश के गरीब किसान व मजदूर की कमाई के पैसे से विदेशों में जाकर अपने कितने भी करतब दिखालें–पर वास्तव में ऐसे लोग तो इन्सान कहलाने के काबिल भी नहीं हैं। आज किसानों को चारों तरफ से घेरकर लूटा जा रहा है, और इसकी शुरुआत फसल के लिए खाद व बीज खरीदे से ही हो जाती हैं। ७१ साल की आजादी के बाद भी देश के अधिकांश किसानों को सिंचाई के लिए आज भी भगवान के भरोसे रहना पड़ता है। किसान अपनी जमीन पर जो फसल उगाता है उसकी कीमत भी वह खुद तय नहीं कर सकता, सरकार उसकी कीमत तय करती है और सरकार द्वारा तय कीमत पर भी **जब वो अपनी फसल बेचने 'सरकारी खरीद एजेंसी' के पास पहुँचता है तो एजेंसी के अफसर या कर्मचार कोई न कोई बहाना बनाकर उसकी फसल खरीदने में ना नुकर करने लगते हैं**- कभी कहते हैं तुन्हारी फसल में नमी निर्धारित मानकों से अधिक है, दो चार दिन इसे धूप और दिखाओ फिर लाना, कभी बहाना लगाया जाता है कि हमारे पास बोरियाँ नहीं हैं– हफ्ते, दस एक दिन में आ जायेंगी अनाज, फिर ले कर आना इत्यादि–इत्यादि। किसान ट्रेक्टर या ट्राली का इंतजाम करके मंडी पहुँचता है, फसल के पैसे के लिए महीनों से वह और उसका परिवार इन्तजार कर रहा होता है क्योंकि उसे कर्ज चुकाना होता है, बच्चों की पढ़ाई के लिए पैसा देना होता है, या बिटिया की सगाई, गौना या शादी करनी होती है किन्तु उसे अपनी फसल को सरकार द्वारा **निर्धारित कीमत से भी कम में अनाज मंडी के 'लालाजी' को बेच कर आनी पड़ती है,** और लाला जी बाद में उसे सरकारी एजेंसी' को ही बेच देते हैं। इसमें सरकारी **खरीद एजेंसी के अफसरों व मंडी के व्यापारियों की मिली भगत होती है।**

आज स्थिति यह है कि एक मध्यवर्गीय **किसान व उसका परिवार मिल कर जो फसल उगता है उसे उस पर उन सबकी पूरी मजदूरी तक भी वसूल नहीं हो पा रही है।** खेती के लिए ऋण के स्थिति यह है कि यदि किसान बैंक से लोन लेता है तो बैंक कर्मचारी 'कमीशन' वसूलते हैं और साहूकार से लेता है तो फिर वो ब्याज के ऐसे चक्रव्यूह में फंस जाता है कि–उसे इससे निकालने के लिए 'आत्महत्या' ही एक रास्ता नजर आने लगता है। **आज गाँव-गाँव में 'प्रॉपर्टी डीलर' या उनके एजेंट भी किसानों की जमीन खरीदने के लिए 'घात' लगाए बैठे हुए हैं।** किसान को जमीन बेच कर कोई अन्य काम धन्धे में पैसा लगाने के लिए उकसा कर या उन्हें अन्य किसी 'मजबूरी' में फँसा कर धड़ा–धड़ा किसानों की जमीनें हथियाई जा रही हैं। बड़े–शहरों के पैसे वाले जमीनों में पैसा इन्वेस्ट कर मोटा मुनाफा कमा रहे हैं। कुल मिलाकर स्थिति यह है कि किसान की मेहनत के बल पर साहूकार बैंक के अफसर व कर्मचारी, अनाज मंडी के 'लाला जी' व व्यापारी वर्ग, बीज, खाद व कीट नाशकों के व्यापारी वगैरह–वगैरह तो मौज उड़ा रहे हैं किन्तु किसान आत्महत्या कर रहा है– और उस पर भी तुर्रा यह है कि नेता लोगों को यह एक 'फैशन' नजर आ रहा है।

उमेश कुमार सोनी

इतिहास में दर्ज है डॉ. अम्बेडकर की सोच

✍ डॉ. सतीशचन्द्र मित्तल

डॉ. अम्बेडकर की भारतीयता के प्रति गहरी आस्था थी। इस सन्दर्भ में तत्कालीन भारत के किसी भी नेता की अपेक्षा वे अधिक स्पष्ट थे। उनकी भाषा में न दोहरापन था और न ही वे अपने शब्दों को वापस लेते थे। डॉ. अम्बेडकर ने तीन मानदण्डों के आधार पर मुस्लिम समाज का तीव्र विरोध किया। ये हैं– मानवता, राष्ट्रवाद और बुद्धिवाद। वे कहते थे, इस्लाम का भ्रातृत्व मानव जाति का भ्रातृत्व नहीं, बल्कि यह भाईचारा केवल मुसलमानों तक सीमित है।

डॉ. अम्बेडकर (१८६१–१६५६ ई.) भारतीय राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक परिवर्तन के उन्नायक थे। **राष्ट्र के इतिहास में आध्यात्मिक-सांस्कृतिक एकीकरण में जो स्थान स्वामी विवेकानन्द है, वही स्थान सरदार पटेल का देश की राजनीति में है, वही स्थान डॉ. अम्बेडकर का राष्ट्र के सामाजिक एकीकरण के लिए है।** उन्होंने अशान्त अपमानित, वंचित, पीड़ित, एक बड़े महत्वपूर्ण भाग को उनके आत्मगौरव के साथ खड़ा करने का असाधारण कार्य किया।

वीर सावरकर ने उन्हें आधारभूत पुरुष कहा। प्रसिद्ध विद्वान कोयनारार्ड एसाल्ट ने उन्हें भारत के महान ऋषियों की श्रेणी में रखा।

समरसता

डॉ. अम्बेडकर का निश्चित मत है कि हिन्दू समाज में सामाजिक समरसता के बिना एकता हो ही नहीं सकती। **१६४७ में दिल्ली की एक सभा में डॉ. साहेब ने कहा था कि हिन्दू परस्पर सगे भाई हैं। और ऐसी भावना अपेक्षित है। आज बन्धुभाव का अभाव है। जातियाँ आपसी ईर्ष्या और द्वेष बढ़ाती हैं। अतः जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं अवरोध को कुप्रथाओं के खिलाफ होना होगा।**

डॉ. अम्बेडकर की भारतीयता के प्रति गहरी आस्था थी। इस सन्दर्भ में तत्कालीन भारत के किसी भी नेता की अपेक्षा वे अधिक स्पष्ट थे। उनकी भाषा में न दोहरापन था और न ही वे अपने शब्दों को वापस लेते थे। **उन्होंने भारतीयता के बारे में कहा था, 'मुझे अच्छा नहीं लगता है जब कुछ लोग कहते हैं कि हम पहले भारतीय हैं–बाद में हिन्दू या मुसलमान। मुझे यह स्वीकार नहीं है। धर्म, संस्कृति, भाषा आदि के प्रति निष्ठा के रहते हुए उसकी भारतीयता के प्रति निष्ठा पनप सकती है। मैं चाहता हूँ कि लोग पहले भी भारतीय हों और अन्त तक भारतीय रहें।'** (देखें डॉ. अम्बेडकर, राइटिंग्स एंड स्पीच भाग–दो पृ. १६५)

डॉ. अम्बेडकर की अगाध भारतीयता के कारण उनका हिन्दूत्ववादी संगठनों से गहरा लगाव था। उनके वीर सावरकर से घनिष्ठ सम्बन्ध थे। **१४ अप्रैल, १६४२ के प्रसंग पर तथा बाद में डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने पर वीर सावरकर ने उनके प्रति अपने भावनापूर्ण विचार व्यक्त किए थे।**

इतना ही नहीं **महात्मा गांधी की हत्या पर जब कांग्रेस सरकार ने वीर सावरकर तथा संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी को षड्यंत्र कर फंसाया था तब उन्होंने कैबिनेट में विधि तथा श्रममंत्री रहते हुए भी हिन्दू महासभा के नेताओं को अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग का आश्वासन दिया था।**

इसी भांति डॉ. अम्बेडकर संघ के प्रणेता डॉ. हेडगेवार के सम्पर्क में १६३५ ई. से थे। अम्बेडकर १६३५ तथा १६३६ में संघ शिक्षा वर्ग में गए थे तथा १६३७ में कतम्हाडा में विजयदशमी के उत्सव पर संघ की शाखा में उनका भाषण हुआ। **उस कार्यक्रम में ६०० की संख्या में १०० से अधिक वंचित तथा पिछड़े वर्ग के स्वयंसेवक थे जिसे देखकर डॉ. अम्बेडकर को बड़ा आश्चर्य ही नहीं हुआ बल्कि भविष्य के प्रति उनकी आस्था भी बढ़ी थी। सितम्बर, १६४८ में उनकी भेंट गुरुजी से भी हुई थी।** इतना ही नहीं डॉ. अम्बेडकर के संविधान सभा की ध्वज समिति के सदस्य होने पर हिन्दू नेताओं ने उनके सामने भगवाध्वज को राष्ट्रीय ध्वज मानने का प्रस्ताव रखा था।

डॉ. अम्बेडकर की इच्छा थी कि भारतीय संविधान में संस्कृत भाषा भारत की राजभाषा बने (देखें, सण्डे स्टैण्डर्ड १० सितम्बर, १६४७)। पीटीआई के एक संवाददाता को उन्होंने कहा था, संस्कृत में क्या हर्ज है? वह भारत की राजभाषा होनी चाहिए।

विघटनकारी तत्वों के विरोधी

डॉ. अम्बेडकर ने मुख्यतः इस्लाम, ईसाई तथा कम्युनिस्टों को राष्ट्रघातक शक्तियों के रूप में वर्णित किया है। उन्होंने लिखा, 'यदि हम ईसाईयत या इस्लाम को स्वीकार करेंगे तो हमारी भारतीयता में अन्तर आएगा।' हमारे सिर यरुशलम और मक्का–मदीना की ओर झुकने लगेंगे। **यदि हम इस्लाम कबूल करते हैं तो मुसलमानों की संख्या दुगुनी हो जाएगी और देश को मुस्लिम राष्ट्र बनने का खतरा हो जाएगा। ईसाइयत ग्रहण करने के पश्चात भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व होगा।** (डॉ. डी.आर. यादव, डॉ. अम्बेडकर व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. २०१)

डॉ. अम्बेडकर ने इस्लाम तथा मुस्लिम राजनीति के बारे में **'पाकिस्तान एण्ड द पार्टीशन ऑफ इंडिया'** में अपने विचार विस्तार से दिए हैं। **वे गैर मुसलमानों को मतान्ध, असहिष्णु, मजहबी तथा गैर सेकुलर मानते हैं क्योंकि मुस्लिम सुधार विरोधी हैं।** उनमें तिलमात्र भी लोकतंत्र की प्रवृत्ति नहीं है।..... हिन्दू और मुसलमानों के बारे में उनका तर्क है कि दोनों में ऐतिहासिक पूर्ववर्ती साम्य का कोई धागा नहीं है जो दोनों को एक सूत्र में पिरो सके। राजनीतिक और मजहबी दोनों ही क्षेत्र में उनका भूतकाल वैर भाव का रहा है। डॉ. अम्बेडकर ने भारत में मुस्लिम गतिविधियों का गहन अध्ययन करने के पश्चात विवेचन किया। उनके अनुसार...

७११ ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर इस्लाम की स्थापना के लिए आक्रमण किया। उसने १७ वर्ष की आयु के ऊपर के पुरुषों का वध कर दिया तथा महिलाओं तथा बच्चों को गुलाम बनाया। (देखें पाकिस्तान एण्ड पार्टीशन ऑफ इंडिया, पृ. ५५ व पृ. ५७) **डॉ. अम्बेडकर के अनुसार कुछ दिशा भ्रमित इतिहासकारों ने महमूद गजनवी को केवल लुटेरा कहा है जबकि उसके आक्रमण का उद्देश्य मन्दिरों का ध्वंस तथा इस्लाम की स्थापना था। तैमूरलंग के १३६८ ई. में भारत पर आक्रमण का उद्देश्य काफिरों को मुसलमान बनाना था। औरंगजेब ने १६६१ ई. में मन्दिरों को तोड़ने का आदेश देकर हिन्दुत्व पर अन्तिम प्रहार किया था।** (देखें, वही पृ. ६०–६३)

संक्षेप में मुस्लिम आक्रमणकारियों तथा शासकों ने भारतीय जीवन प्रवाह में कन्वर्जन, अलगाव तथा साम्प्रदायिकता का विष घोला, जिसकी चरम परिणति २०वीं शताब्दी के चतुर्थक दशक में भारत विभाजन की मांग तथा पांचवे दशक में पाकिस्तान के निर्माण के साथ हुई।

डॉ. अम्बेडकर परिष्कृत हिन्दू राष्ट्रवाद के व्याख्याता थे। उन्होंने अपनी पुस्तकों में 'हिन्दू शब्द का प्रयोग राष्ट्रीयता के लिए कई बार किया था। वे भारत के राष्ट्रोत्थान, शक्तिमान तथा एकता के लिए हिन्दू समाज को सर्वोपरि स्थान देने के प्रबल समर्थक थे। वे वंचितों को भारत के हिन्दू जीवन की मुख्यधारा से जोड़ना चाहते थे, तोड़ना नहीं।

डॉ. अम्बेडकर ने तीन मानदण्डों के आधार पर मुस्लिम समाज का तीव्र विरोध किया है। ये हैं **मानवता, राष्ट्रवाद और बुद्धिवाद**। वे कहते थे, इस्लाम का भ्रातृत्व मानव जाति का भ्रातृत्व नहीं, बल्कि यह भाईचारा केवल मुसलमानों तक सीमित है। इस्लाम राष्ट्रवाद की अवधारणा को नहीं मानता बल्कि वह राष्ट्रवाद को तोड़ने वाला मजहब है।

डॉ. अम्बेडकर ने वंचित जाति के लोगों को सावधान किया कि उनका मुसलमानों और मुस्लिम लीग पर विश्वास आत्मघाती होगा। उन्होंने इसके लिए अविभाजित भारत में मुस्लिम लीग के समर्थक जोगेन्द्रनाथ मण्डल (वंचित जाति के व्यक्ति) का उदाहरण दिया जो पाकिस्तान में विधि और श्रममंत्री बना। पर पाकिस्तान में जिसने वंचित जाति पर बलात् कन्वर्जन को प्रत्यक्ष देखा। (देखें, धनंजय वीर, डॉ. अम्बेडकर–लाइफ एण्ड मिशन, मुम्बई, १६७१, पृ. ३३६)

इस्लाम या ईसाई कन्वर्जन के बारे में उनका मत है कि इन दोनों में से किसी में भी 'कन्वर्टेड' होना वंचित वर्ग को अराष्ट्रीय बनाता है। (देखें–द टाइम्स ऑफ इंडिया,

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 1 का भाजपा एवं कांग्रेस ने आम......

की जनता भाजपा द्वारा दिये गये धोखे का करारा जवाब देगी। उन्होंने कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा ही भगवान राम के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर बनायेगी। उन्होंने १७ ग्वालियर दक्षिण के अखिल भारत हिन्दू महासभा के कर्मठ प्रत्याशी श्री लक्ष्मण सोनी को भारी मतों से विजयी बनाने की अपील की। सभा में प्रदेश संयोजक श्री मोहन लाल वर्मा, प्रत्याशी श्री लक्ष्मण सोनी, लीला शाक्य, राकेश शर्मा, गिरवर पाल, दुर्ग सिंह, रमेश शर्मा, जगदीश तिवारी, आकाश शाक्य, लाला पंडित, विक्रम भगत, बृजेश शिवहरे, नत्थी लाल, उत्तम चौरसिया सहित बड़ी संख्या में १७ ग्वालियर दक्षिण के नागरिक उपस्थित थे।

शेष पृष्ठ 1 का क्या ११ दिसंबर तक होगा.....

हवाले से उन्होंने बताया कि मुझे आशा है मंदिर के निर्माण के लिए एक कानून आएगा। सरकार हमारी भावनाओं का आदर करेगी, यह सरकार के वरिष्ठतम मंत्री ने मुझसे कहा है। उन्होंने मुझसे धैर्य रखने को कहा है। चित्रकूट के स्वामी रामभद्राचार्य ने यह भी कहा कि संघ प्रमुख मोहन भागवत की तरफ से उन्होंने आश्वासन दिया गया है कि कार्रवाई होगी। अपने संबोधन में स्ध्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि उन्होंने मुझे आश्वसन दिया है कि संसद में मंदिर निर्माण के लिए कानून लाने के लिए सरकार पर दबाव बनाया जाएगा। हम चाहते हैं सभी सांसद एकजुट हों।

शेष पृष्ठ 6 का कोई राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष नहीं.....

था राष्ट्र के लिये। इन क्रान्तिकारियों का ह्रदय धर्म से ओतप्रोत न होता तो ये देश कैसे आजाद होता? जो गीता को सिरहाने रखकर सोते थे, जिनको ये मालूम था कि मरना तो एक दिन है ही। क्यों न राष्ट्र के लिये मरें, धर्म उनके जीवन में ओतप्रोत था। इसलिए वो राष्ट्र के लिए मरे। राष्ट्र के लिये अपने जीवन को स्वाहा कर गए। दसों गुरुओं ने क्या ऐसे ही अपना बलिदान कर दिया था? अपने जीवन को स्वाहा कर दिया था। अपने जीवन को समर्पित कर दिया था। धर्म से ओतप्रोत होकर ही उन्होंने अपना जीवन जीया था। भारत का इतिहास साक्षी है कि देश के महापुरुषों ने अपने जीवन को धर्म से ओतप्रोत करके अपने राष्ट्र, अपने समाज के लिए न्योछावर किया है। और जब–जब धर्म कीं हानि हुई है महापुरुषों ने और सन्तों ने, ऋषियों ने और ग्रन्थों ने धर्म का ही सन्देश दिया है। जब गुरु गोविन्दसिंह ६ साल के बालक थे, गुरु तेग बहादुर अपने शिष्यों में संगत में बैठे हुए कहते हैं कि आज धर्म को और देश को बलिदान की आवश्यकता है। ६ साल का बालक गाविन्दराय कह रहा है कि पिताजी धर्म औरदेश किसी महापुरुष का बलिदान मांगते हैं, तो आपसे बढ़कर महापुरुष कौन हो सकता है इस समय हिन्दू धर्म में, सनातन धर्म में? क्या अभिप्राय था? आप ही अपना बलिदान दीजिए! इतिहास साक्षी है गुरु गोविन्दसिंह ने धर्म से ओतप्रोत होकर सनातन धर्म की रक्षा के लिए देश के लिये अपने पिता का बलिदान कर दिया। क्योंकि धर्म के संस्कार उनको घुट्टी में मिले थे। बाद में गुरु गाविन्दसिंह अपने चारों बेटों को बलिदान कर देते हैं। धर्म से ओतप्रोत होकर, धर्म को अपने में जीवन में धारण करके। दो बेटे युद्ध में मारे गए और दो बेटों को जिन्दा दिवारों में चिनवा दिया गया। और उसके बाद स्वयं भी धर्म से ओतप्रोत होकर धर्म के लिए अपने आपको बलिदान कर देते हैं। दुनिया के इतिहास में, केवल भारत के इतिहास में ही नहीं, दुनिया के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं मिलेगा, आज तक नहीं हुआ है और न आगे होने की संभावना है, जिसने धर्म से ओतप्रोत होकर के पहले अपने पिता को बलिदान किया और उसके बाद स्वयं भी बलिदान हा गए। राष्ट्र के प्रति इतनी भक्ति उनमें कैसे आई? क्योंकि वे धर्म से ओतप्रोत थे। वीर बन्दा वैरागी की बोटी–बोटी काटी जा रही है। बोटी–बोटी काटे जाने पर उसका खून गिर रहा है और उसी खून को उठाकर वह अपने चेहरे पर मल रहा है, लगा रहा है। उस धर्मानुयायी, उस सनातन धर्मी बंदा वैरागी से लोग पूछते हैं कि आपकी बोटी–बोटी काटी जा रही है, ये आप क्या कर रहे हैं। बन्दा वैरागी कहता है, धर्म का उद्घोष करता है कि मेरी बोटी–बोटी काटी जा रही है, इस कारण मेरा चेहरा निस्तेज हो रहा है। जबकि होना ये चाहिए कि धर्म पर बलिदान होने वाले व्यक्ति का चेहरा सतेज होना चाहिए, तेजस्वी होना चाहिए। इसीलिए मैं अपने खून को अपने चेहरे पर लगा रहा हूँ, ताकि मेरा चेहरा मरते हुए भी तेजस्वी रहे। धर्म के मार्ग पर चलने वालों को लोग कहते हैं, पागल है। धम्र के मार्ग पर चलने वालों को लोग नासमझ कहते हैं। पर मेरा प्यारा बलिदानी रामप्रसाद बिस्मिल क्या कहता है धर्म से ओतप्रोत होकर के–

इन्हीं बिगड़े दिमागों में भरे अमृत के लच्छे है।
हमें पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं।।

धर्म के दिवाने जिन्होंने सारे देश को अपना घर मान लिया है, जिसने सारे समाज को अपना परिवार मान लिया है, जिनको जीवन में धर्म के संस्कार घुट्टी में प्राप्त हुए हैं, वो इन छोटी–छोटी बातों की परवाह नहीं करते। रामप्रसाद बिस्मिल कहते हैं–

सरफरोशी की तमत्रा अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि आदि अनेक क्रांन्तिकारियों ने धर्म से युक्त होकर के ही तो अपना बलिदान दिया था। महाराणा प्रताप ने भी तो धर्म से युक्त होकर के ही जंगलों की खाक छानी थी। घास की रोटियाँ खाई थी। इसीलिए तो उनके बच्चों ने घास की रोटियाँ खाई थी। ओर वो घास की रोटी भी ख रही थी उनकी बालिका, तो बिलाव छिन ले जाता है। ये राष्ट्र के प्रति उनकी भावनाधर्म के ही कारण थी। मेरा राष्ट्र अत्याचार से पीड़ित न हो, मेरा देश अन्याय से पीड़ित न हो। मेरा देश कभी विदेशियों का गुलाम न रहे। विदेशियों का परतन्त्र न रहे। ये भावना मेरे देश के क्रान्तिकारियों में, महापुरुषों में धर्म के कारण से ही आई थी और जिस दिन से आपने मैकाले की शिक्षा पद्धति पर चलकर धर्म को बहिष्कृत कर दिया है, उस दिन से आपके परिवार भी ट्ट रहे हैं, आपका समाज भी बिखर रहा है, आपके बच्चे आतंकवादी बन रहे हैं। आपके बच्चे अश्लील फिल्मों को देखकर के न जाने क्या–क्या कुकृत्य कर रहे हैं। क्योंकि आपने अपने बच्चों को धर्म के संस्कार देना छोड़ दिए हैं। जिस दिन धर्म को अपने जीवन में धारण करोगे, उस दिन समाज, परिवार और राष्ट्र में सुव्यवस्था हो जाएगी, समाज, परिवार और अधिक सुदृढ़ होगा, सुदृढ़ से सुदृढ़तर होता जाएगा। राष्टथ का अभ्युदय, उत्थान और उन्नति होती जाएगी।

शेष पृष्ठ 4 का स्वाइन फ्लू जानकारी.....

दूर रहे। मुँह ढककर खासे व छीकें।

- प्रतिदिन कम से कम ८ से १० गिलास पानी और तरल पदार्थ पिएं।
- मुंह रूमाल या नैपकीन से ढक कर रहें। खांसते या छींकते समय अपना मुँह और नाक टिश्यू पेपर से ढकें।

उपचार

स्वाइन फ्लू का उपचार चिकित्सा सलाह पर रोगी के लक्षणों के आधार पर किया जाता है। इस रोगी की प्रमुख दवा टैमी फ्लू है, जो सभी सरकारी अस्पतालों और मुख्य चिकित्सा अधिकारियों के कार्यालयों में निःशुल्क उपलब्ध है।

१. बुखार के लिए पैरासीटामोल
२. खांसी के लिये सीरप
३. सर्दी–जुकाम एंटी एलर्जिक दवाएं दी जाती है।
४. योग्य चिकित्सा के परामर्श से ही इन दवाओं का प्रयोग करना चाहिए
५. इन दवाओं से बीमारी की तीव्रता बहुत कम हो जाती है और इस बीमारी से होने वाले दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है।
६. अस्पतालों में मास्क के प्रयोग से विषाणु के फैलाव में कमी आती है।

टीकाकरण

स्वाइन फ्लू का टीका (वैक्सीन) अब बाजार में उपलब्ध है।

- यह टीका गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिये भी सुरक्षित है। खतरे वाले समूह में शामिल सभी लोगों के (एड्स के रोगी, मधुमेह, दमा, टी०बी०, श्वास के रोगी, नशे के लती, कुपोषण व एनीमीया खून की अल्पता से प्रभावित रोगी और गर्भवती महिलाएं) लिए टीकाकरण जरूरी है।
- अंडो से एलर्जी वाले लोगों के फ्लू टीका नहीं लगवाना चाहिये।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 7 का

कौन थे आर्य? क्या.......

आपस में बाँटने के लिए काल्पनिक इतिहास घड़ दिया गया है। वैदिक लोग भारतीय सभ्यता के निर्माता हैं इस तथ्य को कोई भी नहीं बदल सकता है कि यही वह वैदिक संस्कृति थी जिसने भारतीय सभ्यता के जन्म को जन्म दिया। वैदिक धर्म भारत की मूल संस्कृति है और कुछ भी इस तथ्य को बदल नहीं सकता है। बाकी कुछ महीनों में साफ हो जाएगा। मगर अभी तक जो कुछ भी राखीगढ़ी और यूपी के सिनोली में मिला है, उससे एक बात तो साफ है कि इतिहास में कुछ तो जरूर बदलेगा?

शेष पृष्ठ 8 का

भाई परमानन्द जी आज.....

राय तथा इन दोनों महापुरुषों के अनुयायी भी हिदू–मुसलमान और ईसाई को जातिमात्र समझते थे। आरम्भ में हिन्दू–मुसलमान को निकट लाने का प्रयास किया तो यही समझा गया कि यह झगड़ा पन्थगत है। अतः दादू कबीर, गुरुनानक इस की विभिन्नता को मिटाने का यत्न करते रहे। वे असफल हुए। मुसलमान अपना विस्तार करते रहे। विभाजन के बाद देश में उनकी संख्या थी २००१ की धर्म आधारित जनसंख्या के अनुसार उनकी संख्या पहले से भी दुगुनी हो गई है और हिन्दुओं की संख्या घट गई है। इस स्थिति में भाई जी के कथनों की सार्थकता उभर कर सामने आ रही है। मगर.... आज सबसे अधिक खेद की बात यह है कि भाई जी के उँत्तराधिकारी और प्रशंसक इतिहास की उपेक्षा कर, वही बातें कह रहे हैं, जिनका विरोध करने में भाई जी ने अपना समस्त जीवन लगाया। भाई परमानन्द स्मारक समिति द्वारा आयोजित एक सभा को सम्बोधित करते हुए एक हिन्दू नेता ने बड़े जोश के साथ कहा था कि भाई जी देशभक्त थे, आज यदि वे जीवित होते तो हिन्दू–मुस्लिम एकता की बात करते! क्या यह एक स्वर्गीय आत्मा के साथ न्याय है? क्या पाकिस्तान बन जाने के बाद भी देश में हिन्दु–मुस्लिम समस्या का दृश्य वही नहीं, जो संयुक्त भारत में १६३० से १६४७ तक था? परन्तु राजनीतिज्ञा की सत्ता की भूख उन्हें कई गलत धारणाएँ व्यक्त करने पर बाध्य कर देती है। भाई जी के मार्ग पर चलकर सोचने वाले किसी भी व्यक्ति को यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इस देश की समस्या हिन्दू–मुस्लिम एकता से नहीं हिन्दू मात्र को एक झण्डे तले लाकर ही सुलझेगी। राजनीतिक मृगतृष्णा के पीछे भाग–भागकर हमारे देश के स्वयंभू कर्णधारों ने अपना और देश का सर्वनाश किया है परन्तु उन्हें रोके कौन?....

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 9 का

इतिहास में दर्ज है.....

२४ जुलाई, १६३६) उन्होंने यह भी कहा कि इनको अपनाने से वंचित वर्ग को सन्देह की दृष्टि से देखा जा सकता है। **डॉ. अम्बेडकर ने मुसलमानों में जातीय भेदभाव तथा महिला दुर्दशा का भी वर्णन किया है।** (वही, पृ. २१६–२१७) साथ ही **उन्होंने कांग्रेस की मुसलमानों के प्रति अति सहिष्णुता तथा मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति की कटु आलोचना की।** (देखें, वी.एस. सक्सेना, मुस्लिम इन द इंडियन नेशनल कांग्रेस, पृ. २३४)

डॉ. अम्बेडकर इस्लाम की भान्ति ईसाइयत के जरा भी पोषक नहीं है। उनके अनुसार, **'ईसाई सदाचरण नहीं करते। ईसाइयत के लिए हमें यरुशलम की ओर झुकना होगा जो न भारतभूमि है और न ही भारतीयता का इससे कोई संबंध है।'** (देखें वसन्त सिंह, आम्बेडकर, पृ. ६१)

ईसाई बनने के लिए स्वयं डॉ. अम्बेडकर को वित्तीय सहायता देने की पेशकश की गई थी। उनके अनुसार दक्षिण भारत चर्च में जातीय भेदभाव है। डॉ. अम्बेडकर ने मार्क्सवाद का जितना अध्ययन किया, उतना शायद ही भारत के किसी कम्युनिस्ट विद्वान या इतिहासकार ने किया हो (धनंजय कीर, पूर्व उद्धृत, पृ. ३०१) उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना बुद्ध और मार्क्स में मार्क्सवादी दर्शन को पूर्णतः नकारते हुए उसकी अनेक कमियों को बताया है। **डॉ. अम्बेडकर ने विश्व इतिहास के सन्दर्भ में विधि संरचनाओं का गहन चिन्तन किया। उन्होंने १७८६ में प्रारम्भ हुई फ्रांस की क्रान्ति का स्वागत किया जिसका प्रमुख उद्घोष स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व था। पर वह फ्रांस की भान्ति समाज को समानता न दे सकी।** उन्होंने **१६१७ की रूस की बोल्शेविक क्रान्ति का स्वागत किया परन्तु उसने रूस में भ्रातृत्व तथा स्वतन्त्रता को बिल्कुल भुला दिया,** परन्तु बौद्ध मत में उन्होंने इन तीनों उद्घोषों की प्राप्ति की। (देखें, डॉ. कृष्ण गोपाल, बाबासाहेब : व्यक्ति और विचार, नई दिल्ली, पृ. २६५) **डॉ. अम्बेडकर मार्क्स के केन्द्र बिन्दु, उनकी धुरी आर्थिक तत्व को व्यक्ति तथा इतिहास की प्रेरक शक्ति मानते थे। उन्होंने मार्क्सवाद की इतिहास की भौतिकवादी व्यवस्था को अस्वीकार किया।** (विस्तार के लिए देखें, सतीश चन्द्र मित्तल, साम्यवाद का सच, नई दिल्ली २००६, पृ. ६०) मार्क्स ने धर्म को अफीम की पुड़िया कहा, जबकि डॉ. अम्बेडकर ने कहा, **जो कुछ अच्छी बात मेरे अन्दर है, धार्मिक भावनाओं के कारण सम्भव हुई है।** वे मार्क्स के एक प्रमुख सिद्धान्त वर्ग संघर्ष को खोखला तथा आचारहीन बतलाते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने भारत के कम्युनिस्टों को पहले ब्राह्मण, बाद में कम्युनिस्ट बताया तथा उन्होंने अपने विस्तृत अनुभवों के आधार पर कम्युनिस्टों को **'बंच ऑफ ब्राह्मण ब्वॉयज'** कहा है। (देखें, डॉ. तुलसीराम, कम्युनिस्ट और दलितों के रिश्ते, राष्ट्रीय सहारा, २५ फरवरी, २००२)

समय-समय पर भारतीय कम्युनिस्टों ने यद्यपि डॉ. अम्बेडकर पर तीखे प्रहार किए, उन्हें देशद्रोही ब्रिटिश एजेंट बताया। उन्हें अवसरवादी, अलगाववादी तथा ब्रिटिश समर्थक बताया। (देखें, गैइल ऑफ, दलित एण्ड डेमोक्रेटिक रिवोल्यूशन डॉ. अम्बेडकर एण्ड दलित मूवमेंट इन कोलोनियल इंडिया) पर डॉ. अम्बेडकर इससे विचलित नहीं हुए बल्कि तत्परता से अपने कार्य में लगे रहे।

सम्भवतः **डॉ. अम्बेडकर की सबसे बड़ी उपलब्धियों में एक भारतीय समाज को कम्युनिस्टों से बचाना रहा।** डॉ. अम्बेडकर के स्वयं के कथन का हवाला देते हुए श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने लिखा–**वंचित लोगों को कम्युनिज्म के बीच अम्बेडकर एक अवरोध बनकर खड़े हैं और दूसरे सवर्ण हिन्दुओं तथा कम्युनिज्म के बीच गोलवलकर भी अवरोध के रूप में हैं।** (दत्तोपंत ठेंगड़ी संकेत रेखा, नई दिल्ली १६५६ पृ. २८७–८८) **संक्षेप में वे मार्क्सवाद को धर्मविहीन तथा रीढ़विहीन मानते हैं।**

दुर्भाग्य से कटु सत्य है कि बहुतों ने राष्ट्र के इस महान व्यक्तित्व की प्रतिभा को न ही पहचाना और न ही उनके सद्गुणों का समुचित राष्ट्रहित में प्रयोग किया। **आमतौर पर मीडिया, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों ने उनको केवल वंचित नेता के रूप में देखा तथा उनकी पहचान को बौना कर दिया।**

कांग्रेस ने भारतीय संविधान निर्माण में उनका पूरा उपयोग किया, पर उसी कांग्रेस से उन्हें सितम्बर १६५१ में त्यागपत्र देकर विरोध में खड़ा होना पड़ा। यद्यपि वोट बैंक द्वारा व्यक्ति जोड़ने के लिए **अप्रैल, १६६० को उनका संसद में चित्र तथा उनके जन्मदिन १४ अप्रैल १६६० को उनकी मृत्यु के ३४ वर्षों के पश्चात मजबूरी में भारत रत्न देना पड़ा जो बहुत पहले हो जाना चाहिए था। भारत के कम्युनिस्टों ने १६३०-३७ तक उनकी प्रतिभा का लाभ उठाया। परन्तु बाद में उनके लिए अपशब्द बोलकर अपना असली रूप दिखलाया।** बहुजन समाज पार्टी ने उनके मुसलमानों, ईसाइयों के बारे में मुख्य विचार को बिल्कुल भुलाकर उनके नाम तथा जाति का लाभ उठाया। अनेक बुद्धिजीवियों ने भी उन्हें **'हिन्दू विद्रोही'** अथवा **'ब्रिटिश भक्त'** सिद्ध करने में अपनी पूरी ऊर्जा लगा दी। इस महान पुरुष के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को सही सन्दर्भ में जानने के लिए आवश्यक है कि हम उनका चिन्तन समग्र रूप से करें। **डॉ. अम्बेडकर परिष्कृत हिन्दू राष्ट्रवाद के व्याख्याता थे। उन्होंने अपनी पुस्तकों में हिन्दू शब्द का प्रयोग राष्ट्रीयता के लिए कई बार किया है। वे भारत के राष्ट्रोत्थान, शक्तिमान तथा एकता के लिए हिन्दू समाज को सर्वोपरि स्थान देने के प्रबल समर्थक थे।** वे वंचितों को भारत के हिन्दू जीवन की मुख्य धारा से जोड़ना चाहते थे, तोड़ना नहीं। **आवश्यकता है कि देश के राजनीतिक, स्वपोषित छद्म सेकुलरवादी, बुद्धिजीवी तथा देश के वंचित वर्ग के नेता इस तथ्य को समझें तथा उसके अनुसार आचरण करें। देश की युवा पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा ले।**

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

मिस्र में ७५ लोगों को फांसी

सहाफत (६ सितम्बर) के अनुसार मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुड के समर्थन में हिंसक प्रदर्शन करने वाले ७५ लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई है। ज्ञातव्य है कि २०१३ में राष्ट्रव्यापी प्रदर्शनों में प्रदर्शनकारियों और सेना के बीच अनेक लोग मारे गए थे। जिन लोगों को फांसी दी गई है उनमें मुस्लिम ब्रदरहुड के प्रमुख नेता मोहम्मद बदई भी शामिल हैं। ज्ञातव्य है कि देश में हिंसा भड़काने के आरोप में ७०० से अधिक लोगों के खिलाफ विभिन्न न्यायालयों में मुकदमे चल रहे हैं। इससे पूर्व भी मुस्लिम ब्रदरहुड के कई समर्थकों को फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। ज्ञातव्य है कि २०१३ में मिस्र के राष्ट्रपति मोहम्मद मोर्सी का सेना ने तख्ता पलट दिया था जिसके बाद देशव्यापी हिंसक प्रदर्शनों का सिलसिला जारी हो गया था जिसमें कम से कम ८०० लोग मारे गए थे।

जमाते इस्लामी के मुखपत्र दावत (१६ सितम्बर) ने एक विशेष लेख प्रकाशित किया है जिसमें मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुड से संबंधित लोगों को फांसी देने की निंदा की है। समाचारपत्र ने लिखा है कि मिस्र में हुए राष्ट्रपति चुनाव का मुस्लिम ब्रदरहुड ने बहिष्कार करने का निर्णय किया था। इस्लाम समर्थक इस पार्टी को मिस्र की सरकार ने अवैध घोषित किया था। अब्दुल फतहा अल–सीसी मिस्र के ५ वें राष्ट्रपति हैं जिनकी पृष्ठभूमि सेना की है। यही कारण है कि मिस्र के प्रशासन पर अब सेना की पकड़ हो गई है। २०१३ में मुस्लिम ब्रदरहुड की ओर से देश में जो धरने दिए गए थे, उनको हटाने के लिए सेना ने ताकत का इस्तेमाल किया था जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए थे। सरकार ने धरना देने वालों पर आरोप लगाया था कि उन्होंने हिंसा को उभारा है। मिस्र सरकार ने यह भी आरोप लगाया था कि इसमें भाग लेने वाले सशस्त्र थे और उन्होंने आठ सैनिकों की हत्या कर दी थी। इस घटना की आड़ लेकर मिस्र सरकार मुस्लिम ब्रदरहुड के नेताओं को मौत की सजा दे रही है। मानव अधिकारों के अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने इन सजाओं की निंदा की है और इसे देश के संविधान के खिलाफ बताया है। इस फैसले के खिलाफ मुफ्ती आजम से राय लेने के बाद न्यायाधीश पुनर्विचार कर सकता है। इन धरनों में हिंसा करने के आरोप में ७२६ लोगों के खिलाफ मुकदमे बनाए गए थे जो कि विचाराधीन हैं। समाचार पत्र ने लिखा है कि मुस्लिम ब्रदरहुड को आतंकवादी संगठन घोषित करने के बाद मिस्र सरकार ने उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की। हजारों व्यक्तियों को जेल में डाल दिया गया और सैकड़ों को फांसी पर लटका दिया गया। मिस्र की एक अदालत ने २०१४ में मोहम्मद मोर्सी के ५२६ समर्थकों को मौत की सजा सुनाई थी और केवल दो दिन के भीतर ही फैसला सुना दिया था। उन्हें अपने बचाव में तर्क देने तक का मौका नहीं दिया गया था। इसके अतिरिक्त मोहम्मद मोर्सी और मुस्लिम ब्रदरहुड के ३५ अन्य लोगों के खिलाफ हमास के मिलिट्री विंग के लिए भी जासूसी करने का आरोप लगाया है। इन पर आतंकवाद, सरकारी सम्पत्ति को क्षति पहुंचाना आदि के आरोप लगाए जा चुके हैं। हालांकि ७५ लोगों को फांसी पर लटकाने का फैसला मिस्र का आतंरिक मामला है मगर इतने लोगों को मनमाने तरीके से फांसी पर लटकाया जाता है तो उसे विश्वभर को खामोशी से नहीं देखना चाहिए क्योंकि यह फैसला राजनीतिक द्वेष के कारण किया गया है। मिस्र के सैनिक शासकों को यह बात याद रखनी चाहिए कि बंदूक के जोर से मिस्र की जनता की लोकतांत्रिक भावना को जबरन खत्म नहीं किया जा सकता। मिस्र में कई वर्षों बाद लोकतंत्र आया था और ५२ प्रतिशत मतों के समर्थन से मोहम्मद मोर्सी देश के राष्ट्रपति चुने गए थे। मगर यह सेना, अमेरिका और इजरायल को पसंद नहीं था। मिस्र के नए संविधान के प्रश्न पर देश में जो जनमत संग्रह हुआ था उसमें ६० प्रतिशत जनता ने मोहम्मद मोर्सी शासन का समर्थन किया था। सैनिक दबाव के कारण न्यायापालिका ने संसद को ही अवैधा घोषित कर दिया। मोहम्मद मोर्सी ने जो आर्थिक नीतियां बनाई थीं वह मिस्र की जनता को अमेरिका गुलामी से मुक्ति दिलाने वाली थी। इसलिए वह इजरायल, अमेरिका और दुबई को पसंद नहीं आई। इन नीतियों के कारण मिस्र की जनता के लिए अनेक रोजगार के दरवाजे खुले। तुर्की ने देश में नए–नए उद्योग स्थापित करने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया। मोहम्मद मोर्सी प्रशासन ने हजारों बेगुनाह कैदियों को जेलों से मुक्ति दिलवाई। देश में उदारवाद की जो लहर आई उसके कारण सरकार, प्रशासन और अर्थव्यवस्था पर सेना का वर्चस्व कम हुआ।

कबिरा खड़ा बजार में

चुनावी मौसम में टिकट पर आधारित हो रहीं निष्ठाएं

आजकल नेताओं की निष्ठा चुनाव में मिलने वाले टिकट पर निर्भर होती हैं। चुनाव से पूर्व पार्टी को अपनी माँ कहने वाले आज्ञाकारी नेता टिकट ना मिलने पर अचानक मां बदलने को आतुर हो जाते हैं और उन्हें पहले सौतेली माँ की तरह दिखने वाली दूसरी पार्टी में ढेर सारा ममत्व दिखने लगता है। इसके बाद वह बागी हो जाता है और उसे छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर देने की नौटंकी हो जाती है। जबकि होता यह है कि पार्टी से आज निकाला गया नेता तीन–छह माह बाद फिर उपयोगी हो जाता है। ऐसे बयानवीर नेता कहते हैं कि टिकट मिल गया तो देश बदल दूंगा, नहीं मिला तो पार्टी बदल लूंगा। राजनीतिक क्षेत्र में आजकल जो चल रहा है, उसकी सजीव और सटीक व्याख्या इससे ज्यादा नहीं हो सकती। कहां जा रही है हमारी राजनीति और कितना गिर सकते हैं हमारे राजनेता। क्या लोकतंत्र के लिए यही उनका दायित्व है? बिना सत्ता, बिना कुर्सी क्या जनसेवा असंभव है? क्या साबित करना चाहते हैं दल या स्थान बदल कर। वर्षो जिनकी सेवा की, क्या वे बेइमान थे या उनकी विचारधारा गलत थी। सोच गलत थी। आखिर चुनाव के समय टिकट नहीं मिलने या पार्टी में घटते रसूख के बाद ही हमारे माननीयों की अन्तरात्मा क्यों जागती है। चुनावों को लेकर राजनीतिक दलों में टिकटों के लिए जो मार–काट मचती है, उससे आमजन को समझ जाना चाहिए कि वे नेताओं के लिए फालतू हैं क्योंकि यह हाल रोज मीडिया पर सामने आ रहा है। हजारों लोग अपने टिकट के लिए पार्टी मुख्यालयों में डेरा डाले पड़े रहते हैं। इनमें जितने उम्मीदवार होते हैं, उनसे कई गुना ज्यादा उनका हौसला अफजाई करने और टिकट बांटने वालों (आलाकमान) के सामने शक्ति प्रदर्शन के लिए ले जाए जाते है। उम्मीदवारों में असंतोष की एक बड़ी वजह यह भी होती है। पांच साल भले ही जनता के बीच नहीं गए, लेकिन चुनाव पूर्व एक महीना ये आलाकमान की आंखों में रहना चाहते हैं। चुनाव अभियान समितियों के चक्कर लगाते फिरते हैं। प्रदेश के बड़े नेता इनको फरिश्ते नजर आते हैं। लेकिन इधर टिकट कटा और उधर पिक्चर बदल जाती है। आस्था, सेवा, विचारधारा ऐसे पलटी मारती है कि गिरगिट भी शरमा जाए। क्या उनके प्रदेश नेतृत्व इतने कमजोर और खोखले हैं कि पांच साल में यह तय नहीं कर पाते कि कौन नेता किस क्षेत्र में पार्टी और जनता की अगुआई कर सकता है। अगर ऐसा है तो सबसे पहले ऐसे नेताओं को बदलना चाहिए। इनकी क्षमताओं पर ही नहीं, आलाकमान की क्षमता पर भी सवाल उठने चाहिए। यदि केन्द्रीय और प्रादेशिक नेतृत्व सक्षम हो तो चुनाव के समय उम्मीदवारों की मंडी लगे ही नहीं। नेता दल बदलू बने ही नहीं। पार्टियों को अपने संविधान और नियम भी बदलने चाहिए। इनमें सबसे पहले अवसरवादिता खत्म होनी चाहिए। देश और समाज की इससे खराब नियति और क्या हो सकती है? कुछ माह बाद आम चुनाव होने हैं, यह फिर दोहराया जाएगा। कुछ खुश, कुछ नाराज होंगे, इधर से उधर और उधर से इधर आएंगे–जाएंगे।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 05 दिसम्बर से 11 दिसम्बर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।